चौथा अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में समाज विषयक समय बोध

4.1 समाज का अर्थ एवं परिभाषा :–

समाज एक व्यापक संकल्पना है। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है। मनुष्य जीवन के सभी क्रियाकलाप इसी समाज में सम्पन्न होते हैं। मनुष्य की शिक्षा–दीक्षा, विवाह, गृहस्थी, उपजीविका, लेन–देन, संतानोत्पत्ति होते हैं। समाज की अवधारणा मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति पर आधारित है। यही उसे संबंधों की ओर अग्रसर करती है। मनुष्य के विकास के लिए उसके संबंधों में एकरूपता होना अनिवार्य है। सामान्य शब्दों में समाज का अर्थ है – समूह, गिरोह या एक स्थान पर रहने वाले एक ही प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का वर्ग दल या समूह, समुदाय या किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा, सोसाइटी।''[1] महादेवी वर्मा ने अपनी पुस्तक श्रृंखला की कड़ियों में समाज को इस प्रकार परिभाषित किया है। – ''समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जिसमें स्वार्थों की सार्वजनिक रक्षा के लिए अपने विषम आचरणों में साम्य उत्पन्न करने वाले कुछ नियमों से शासित होने का समझौता कर लिया जाता है।''[2]

किंग्सले डेविस आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली व्यवस्था को समाज मानते हैं। इनके अनुसार – ''प्रत्येक प्रकार के समाज में एक प्रकार की संरचनात्मक व्यवस्था का विकास होता है जिससे सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।''[3]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि समाज एक अवधारणा है जिसमें व्यक्ति समूह में रहकर अपनी सुरक्षा के साथ पारस्परिक भावनात्मक सबंधों का निर्वाह करता है। समाज व्यक्ति के हित के लिए है। समाज से सम्पृक्त होने के कारण समाज के प्रति प्रतिबद्धता रखते हुए उसे साहित्य में अभिव्यक्त करता है। उसी कारण स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यकारों की कृतियों में सामाजिक समय बोध परिलक्षित होता है। क्योंकि वह समाज की समस्याओं के प्रति चिन्तित होता है।

4.2 समाज एवं साहित्य का संबंध –

मानव समुदाय समाज है और मानव समाज की एक इकाई है और उसका ज्ञान भण्डार ही साहित्य है। साहित्य एवं समाज का संबंध आत्मा एवं शरीर की भांति अटूट है। साहित्य एवं समाज के इसी पारस्परिक संबंध का उल्लेख करते हुए मानवतावादी लेखक पं॰ हजारी प्रसाद

---

[1] (सम्पा)॰ श्री नवल, नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ॰ 1407
[2] महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़िया, पृ॰ 129
[3] किंग्सले डेविस, मानव समाज, पृ॰ 25

द्विवेदी लिखते हैं – ''साहित्य सामाजिक मंगल का विधायक है। यह सत्य है कि वह व्यक्ति विशेष की प्रतिभा से रचित होता है और यह भी सत्य है कि प्रतिभा सामाजिक प्रगति की ही उपज है।''[4] समाज में आए परिवर्तनों के प्रति तटस्थता का भाव साहित्यकार के लिए असम्भव नहीं दुष्कर अवश्यक होता है। साहित्य, समाज एवं लेखक के अन्तःसंबंधों का उल्लेख करते हुए मुंशी प्रेमचन्द जी ने अपना मन्तव्य इस प्रकार प्रकट किया है – ''साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई कहर देश में उठता है तो साहित्यकार के लिए उससे विचलित रहना असंभव हो जाता है।''[5]

साहित्य की सामाजिक उपयोगिता इसी में है कि वह हमारी चेतना में बहुत गहरे उतर कर हमारी वृत्तियों का संस्कार करता है, उन्हें एक उदात सामाजिकता प्रदान करता है। वह किसी तात्कालिक समस्या का समाधान भले ही न दें किन्तु उसमें यह शक्ति अवश्य होती है कि वह हमारी वृत्तियों को संस्कृत अवश्य करता है। बाह्म घटनाओं की अपेक्षा साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने समय की व्रिदूपताओं, विकृतियों, विषमताओं एवं समस्याओं को निरूपित करता है। रचनाकार का उद्देश्य ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक समयबोध का चित्रण करना होता है ताकि उसकी रचना की महत्ता समय की सीढ़ियों को पार करती हुई भविष्य तक बनी हरे। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में निहित सामाजिक व्रिदूपताओं एवं विशेषताओं का जो चित्रण रचनाकारों ने किया है उनकी आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिकता है क्योंकि कोई भी रचनाकार अपने समय एवं समाज की चित्त–वृत्तियों एवं परिस्थितियों से गहन रूप में प्रभावित होता है। रचनाकार इसी कारण दूरदर्शी होता है क्योंकि वह भविष्य में आने वाले संकटों एवं स्थितियों को वर्तमान में ही रचना में उतार देता है। साहित्यकार अपने समय एवं समाज की विकृतियों एवं असन्तुलन पर केन्द्रित रहता हुआ उन्हीं का परिष्कार करता है। उसी को वह नाट्य काव्य के रूप में पौराणिक, काल्पनिक देशकाल एवं पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

4.3 स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में निहित सामाजिक सरोकार :

स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में रचनाकारों ने अपने समय एवं समाज को सूक्ष्मतम रूप में प्रकट किया है। समाज ऐसी इकाई है जो साहित्य से गहन रूप से जुड़ी हुई है। समाज की समस्याओं, विसंगतियों को लेखक ने अपनी रचनाओं में स्पष्ट रूप से उकेरा है। बाह्म घटनाओं की अपेक्षा साहित्यकार का ध्यान सामाजिक व्यवस्था से संबंधित स्थितियों और उनसे उत्पन्न होने वाली विषमताओं, विकृतियों विद्रुपताओं, एवं असंतुलन पर केन्द्रित रहता है। और वह उन्हीं का वर्णन अपने नाट्य–काव्यों में करता है। नाट्य–काव्यों में पौराणिक कथा एवं प्रतीकों के

---

[4] पं॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी, विचार और वितर्क, पृ॰ 278
[5] मुंशी प्रेमचन्द, साहित्य और उद्देश्य, पृ॰ 25

माध्यम से साहित्यकार वर्तमान समाज का चित्र प्रस्तुत करता है। धर्मवीर भारती जी कृत अंधायुग में चित्रित अश्वत्थामा एक महत्त्वपूर्ण क्रियाशील पात्र है। जो महाभारत युद्ध में शेष बचे पात्रों में सबसे अधिक भावुक, प्रबुद्ध और स्वाभिमानी है। वह आधुनिक मानव की परिस्थितियों का जीवंत प्रतीक है। जो अपने शरीर पर अपने दुष्कर्मों के कारण अनगणित घाव लिए युग–युगान्तर तक जीने के लिए अभिशप्त है। वह अपने पिता की धोखे से हुई मृत्यु से विषिप्त हो गया है। जिस कारण वह असामान्य व्यवहार करने लगता है और उसमें बदले की भावना का सरोकर होता है। फलस्वरूप वह पाण्डवों के शिविर में घुसकर सोते हुए पाण्डवों को बेरहमी से मारकर अमर्यादित बर्बर पशु का प्रतीक बन जाता है। दुर्योधन के प्रति उसकी अनन्य निष्ठा है तथा वह नरसंहार का उत्तरदायी कृष्ण के कपटपूर्ण व्यवहार को मानता हुआ उसकी स्पष्ट आलोचना करता है –

''पूरे पाण्डव वंश को
निर्मूल किए बिना शायद
युद्ध लिप्सा
शांति होगी, कृष्ण की।''[6]

महाभारत के युद्ध के माध्यम से लेखक ने वर्तमान समय में आने वाली सामाजिक स्थितियों का चित्रण किया है। युद्ध का कुपरिणाम संहार ही संहार है जो आज समाज के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन चुका है। युद्ध के कारण समाज की बर्बादी को कविवर धर्मबीर भारती ने अपने नाट्य–काव्य में परिलक्षित किया है। जो सामाजिक अमानवीयता का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करती है –

''दुपहर होते होते हिल उठा नगर
खंडित रथ टूटे छकड़ों पर लदकर
ये लौट रहे ब्राह्मण, स्त्रियाँ, चिकित्सक
विधवाएँ, बौने बूढ़े, घायल, जर्जर ।''[7]

सदैव से साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब रहा है। मानवजीवन इतना समस्याग्रसित एवं जटिल हो गया है कि साहित्यकार को समाज की समरूपताओं के चित्रण के साथ–साथ उनके हल की ओर भी संकेत करना पड़ता है। आज का साहित्य इस प्रकार समाज का प्रेरक भी बन गया है किसी भी नाट्य–काव्य के लिए आज के साहित्यकार ऐसा पौराणिक अथवा ऐतिहासिक कथानक चुनते हैं, जिसके माध्यम से वर्तमान समाज की समस्याएँ वं हल संकेत रूप में चित्रित किये जा सकें। इस प्रकार का कथानक रचना को अत्यन्त सशक्त एवं प्रभावशाली बना देता है।

---

[6] डॉ० धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ० 64

[7] वही, पृ० 49

दुष्यन्त कुमार ने अपने नाट्य काव्य एक कंठ विषपायी में भगवान शंकर के जीवन से संबंधित कथा का दक्ष यज्ञ विध्वंस एवं मृत पत्नी सती के प्रति उनके मोह वाला अंश चुना है। इस पौराणिक कथानक में दुष्यन्त कुमार ने जर्जर रूढ़ियों एवं मृत परम्पराओं से चिपके पुरातन पंथियों, प्रजातंत्र में भी राजतंत्र के समान दुख भोगती प्रजा, दोहरा जीवन जीने वाले शासनाध्यक्ष, परस्पर पक्षपात करने वाले महापुरूषों एवं युद्ध के लिए मतवाले सेनापतियों पर व्यंग्यात्म प्रहार किये हैं।

आधुनिक समय में प्रेम विवाह एक ज्वलंत समस्या बन चुकी है। अभिभावक यह समझने का प्रयत्न नहीं करते कि जीवन साथी चुनने का अधिकार एवं योग्यता नई पीढ़ी से सम्बंधित है। जब किसी सम्पन्न परिवार की संतान किसी साधारण स्थिति वाले परिवार की संतान से विवाह करने की इच्छा प्रकट करती है तो उसके माता–पिता दक्ष प्रजापति के शब्दों में अपनी सरल संतान को बहकाने का नाम देते हैं। ये विवाह संस्था पर कटाक्ष करते हुए विवाह को भी अपहरण का नाम दे देते हैं :–

''मैं निश्चय ही इसको अपहरण कहूंगा
क्या अबोध मन को फुसलाकर
देवत्वों का जाल बिछाकर
विविध प्रलोभन देकर उसे
जीत लेना, अपहरण नहीं है।''[8]

सती एवं शिव के प्रेम विवाह करने पर दक्ष समाज में स्वयं को अपमानित समझता है तथा वह शिव को अपना जमाता मानने से इंकार कर देता है। वह कहता है कि मैं शिव को समाज से बहिष्कृत करके छोडूंगा। दक्ष वर्तमान समाज में ऐसे माता पिता के प्रतीक हैं जो प्रेम विवाह के विरूद्ध होते हैं तथा संतानों द्वारा प्रेम विवाह करने को वह अपना अपमान समझते हैं। दक्ष भी इसी लिए शंकर को समाज से बहिष्कृत करना चाहते हैं क्योंकि शंकर ने दक्ष की पुत्री सती से प्रेम विवाह कर दक्ष की सामाजिक प्रतिष्ठा को खण्डित किया है। वह कहता है कि शिव ने मेरी मर्यादा को अपमानित किया है। इसलिए मैने इस यज्ञ का आयोजन किया है जिसमें मैं महादेव को आमंत्रित न करके उसकी आत्म प्रतिष्ठा का भ्रम तोडूंगा क्योंकि मेरी दृष्टि में वह एक अपहरण है।

समाज में जब बच्चे अपने माता–पिता के विरूद्ध प्रेम विवाह करते हैं तो समाज माता पिता को हेय दृष्टि से देखता है तथा समाज में परिवार की उपेक्षा की जाती है। सती के प्रेम विवाह करने पर समाज से मिली उपेक्षा एवं अपमान दक्ष को क्रोधित बना देता है। वह

[8] डॉ० दुष्यन्त कुमार, 'एक कंठ विषपायी', पृ० 13

अपनी झूठी प्रतिष्ठा पर आंच नहीं आने देता। दक्ष अपने बच्चों की खुशी से अधिक अपनी झूठी प्रतिष्ठा को महत्त्व देता है और क्रोधवश शिवशंकर के विषय में कहता है :–

''बहिष्कृत करके छोड़ूंगा मैं
उन दोनों ने केवल मेरी
बाहय प्रतिष्ठा खंडित की है
उनकी आत्म प्रतिष्ठा का भ्रम तोड़ूँगा मैं।''[9]

दक्ष के लिए उसकी झूठी मर्यादा ही सर्वोपरि है। झूठी शान के लिए वह अपने ही बच्चों से रिश्ता तोड़ देता है। प्रेम विवाह करने पर उसके लिए उसकी बेटी नहीं अपितु शिव की पत्नी मात्र बनकर रह जाती है। अपनी झूठी शान के समक्ष उसे आधुनिक अहंकारी पिता की भांति कुछ दिखाई नहीं देता। बारम्बार सामाजिक प्रतिष्ठा की दुहाई देता हुआ शिव को अपना शत्रु मानता है। वीरिणी के बार बार शिव को जामाता कहने पर दक्ष चिढ़ जाता है। आधुनिक समाज में भी बच्चों के प्रेम विवाह करने पर माता पिता समाज में अपने को अपमानित समझते हैं तथा उन रिश्तों को अपना भी नहीं पाते इसलिए दक्ष कहता है –

''जामाता
मैं तो उसको संबंधी कहने में
खुद को अपमानित अनुभव करता हूँ
देवि।
क्या संबंधों का निर्माण
घृणा पर, हठ पर और
अनिच्छा पर भी सम्भव हो सकता है।''[10]

दुष्यंत कुमार की भांति कवि लक्ष्मीनारायण लाल ने भी प्रेम विवाह की समस्या को अपने नाट्य–काव्य 'सूखा सरोवर' में चित्रित किया है। जब राजा की पुत्री प्रेम विवाह करना चाहती है तो राजा द्वारा उसका विवाह जबरदस्ती किसी दूसरे राष्ट्र के राजकुमार से करवाना चाहता है। परन्तु राजकुमारी के जबरदस्ती करने पर वह राजकुमारी के प्रेमी की हत्या करवा दी जाती है। वर्तमान समय में मीड़िया के माध्यम से प्रतिदिन ऐसे समाचार हमें सुनने एवं देखने को मिलते हैं जो प्रेम विवाह से संबधित होते हैं। प्रेम विवाह करने वाले युग को परिवार द्वारा बहिष्कृत भी कर दिया जाता है। परिवार वालों द्वारा प्रताड़ित होने पर प्रेमी युगल घर छोड़कर भाग जाता है। यह भी आधुनिक समय बोध को प्रत्यक्ष करता है।

---

[9] वही, पृ० 15

[10] डॉ० दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ० 12

4.4 नाट्य काव्यों में निरूपित सामाजिक बोध के रूप –

सामाजिक बोध से हमारा अभिप्राय स्वतन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में निहित जागृति से है। डॉ॰ गीतादेव के शब्दानुसार – ''वैसे देखा जाए तो साहित्य रचना का लक्ष्य सामाजिक यथार्थ को आदर्शवादी प्रणाली द्वारा प्रस्तुत करना ही है। साहित्य अन्तर्गत समाज की विभिन्न स्थितियों विभिन्न, आचार, विचार, रूढ़ियों एवं लोकव्यवहारों का चित्रण ही रहता है। कोई भी साहित्यकार अपने युग और समाज की चेतना के प्रति उदासीन नहीं रह सकता। साहित्य समाज का दर्पण है। इसमें युगीन समाज का प्रतिबिम्ब पड़ा रहता है।''[11] स्वातन्त्र्योत्तर रचनाकरों ने नाट्य काव्यों के माध्यम से समाज के प्रत्येक पहलु पर दृष्टिपात किया है तथा सामाजिक बोध को दृष्टि प्रदान की है। जिसमें उन्होंने समसामयिक मनुष्य का चित्रण दलितों, पीड़ितों एवं शोषितों की पीड़ा की व्यंजना, सामाजिक रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं का तिरस्कार आदि को व्यक्त किया है। नाट्य काव्यों के माध्यम से कवि ने केवल बाह्य घटनाओं का ही निरूपण नहीं किया बल्कि उनके माध्यम से अपने समाज के विविध रूपों को भी उनके माध्यम से चित्रित किया है। नाट्य काव्यों में पौराणिक कथाओं के माध्यम से रचनाकार ने आधुनिक समाज को परिलक्षित किया है। यथार्थवादी प्रवृत्तियों का समावेश इनकी मुख्य विशेषता है।

लेखक ने नाट्य–काव्यों में भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को दर्शाया है कि किस प्रकार आज समाज, खण्डों में बंटा हुआ है। आज परिवार एवं समाज में प्रत्येक क्षण मर्यादा का उल्लंघन हो रहा है। व्यक्ति विवेकहीन होकर समाज में रहता है जिससे समाज कलंकित हो रहा है। लेखक ने नाट्यकाव्यों के माध्यम से वर्तमान समाज व्यवस्था में दासवृत्ति ग्रस्त जनता की मनोवृति की निरर्थकता का संकेत दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ के गड्डे में गिरता जा रहा है। जिस कारण वह सत्य से कट गया है। धर्मवीर भारती कृत अंधायुग में धृतराष्ट्र ऐसे ही स्वार्थी व्यक्ति का प्रतीक है :–

''आज मुझे भान हुआ
मेरी व्यक्तिक सीमाओं के बाहर भी
सत्य हुआ करता है।''[12]

वर्तमान समय में व्यक्ति इनता स्वार्थी हो गया है कि समाज से वह स्वयं को कटा हुआ सा महसूस करता है वह समाज संचालन के किसी भी कार्य में अपना सक्रिय योगदान नहीं दे पा रहा है। उसे अपनी विवेकहीनता का बोध तब होता है जब वह सर्वनाश की अंतिम कगार पर खड़ा होता है। वह निजी स्वार्थ के लाभों के घेरे में घिरकर अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। विवेक–अविवेक को आंकने वाली उसकी ज्ञान, दृष्टि, समाप्त हो चुकी है। जिस कारणउसके

---

[11] डॉ॰ गीता दुबे, पंत काव्य में समाज और संस्कृति, पृ॰ 40
[12] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 21

पारिवारिक संबंध भी बिखरते हुए प्रतीत होते हैं। अपने संकुचित दृष्टिकोण के कारण वह अपने तक ही सीमित रहता है। समाज के सर्वनाश के बाद ही उसका विवेक जागता है।

अंधायुग के मिथकीय स्वरूप पर विचार करते हुए कहा जा सकता है कि इसके शीर्षक से लेकर पात्रों एवं प्रसंगों सभी में आधुनिक समय–बोध व्याप्त है अपनी समय के समाज की विसंगितयों, विकृतियों को कविवर धर्मवीर भारती जी ने अंधायुग में वर्णित किया है। अंधायुग चारों ओर से घिरे समुद्र की भांति है। जिसमें अंधे साँप के समान स्वार्थान्ध और मोहान्ध प्रकृति के लोग अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर युग जीवन की स्वाभाविक गति में बाधक बने हैं। इसी कारण डॉ॰ सुरेश गौतम ने अंधायुग को आधुनिक युग के अंधेपन का प्रतीक माना है।[13] निःसन्देह 'अंधायुग' सामाजिक समयबोध को रूपापित करने वाला नाट्य काव्य है । कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से आधुनिक समाज को रूपायित किया है :–

''यह युग एक अंधा समुद्र है
चारों और से पहाड़ों से घिरा हुआ
अपने दर्रों से और गुफाओं से
उमड़ते हुए भयानक तुफान चारो ओर से
उसे मथ रहे हैं –
ऐसा है यह अंधा समुद्र
जिसे हम आज का भाव प्रवाह कह सकते हैं।''[14]

दुष्यन्त कुमार ने भी अपने नाट्य–काव्य 'एककंठ विषपायी' में अंधायुग की भाँति सामाजिक, परम्पराओं, रूढ़ियों, विकृतियों एवं संस्कारों का वर्णन किया है। कवि के अनुसार प्राचीन परम्पराओं के टूटने के बाद ही नवीन का उदय हो सकता है। समाज में रहते हुए हमें समाज द्वारा बनाये गये नियमों एवं मर्यादाओं के अनुसार ही कार्य करना पड़ता है क्योंकि हम समाज के सक्रिय सदस्य होते हैं। जब वे अपना पथ भूल जाते हैं तो वे विकृतियों, विसंगतियों का शिकार हो जाते हैं। वे मृत परम्पराओं से चिपककर समाज के गहन अंधकार में भटक जाते हैं। इसलिए कवि उनके लिए नई उम्मीद व आशा की ज्योति बनता प्रतीत होता है।

''अब अंधियारे में टटोलते फिरते हैं हम
और मेरी रोशनी कहां है तू।''[15]

उपयुर्क्त पंक्तियों में रोशनी आशा का प्रतीक है जो विषम परिस्थितियों में भी हौंसला देती है। समाज में पुत्र के विवाह के बाद जामाता का घर आने पर आदर सत्कार होता है। परन्तु यदि पुत्री समाज में अपनी मर्जी से विवाह करे तो उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है।

---

[13] डॉ॰ सुरेश गौतम, अंधायुग : एक सृजनात्मक उपलब्धि, पृ॰ 30
[14] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰74
[15] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 110

दक्ष द्वारा इसी कारण शिव को अपने यज्ञ में नहीं बुलाया जाता क्योंकि उसने राजा दक्ष की इच्छा के विरूद्ध सती से विवाह किया है जिससे दक्ष का मान समाज में कम हो गया है। इसी कारण दक्ष शंकर को यज्ञ में न बुलाकर उसका अपमान करते हैं। इसी संदर्भ में दक्ष का यह कथन द्रष्टव्य है :–

''वह जिसने घर की परम्परा तोड़ी है
वह, जिसने मेरे माथे पर कालिख पोती है
जिसके कारण
मेरा माथा नीचा है समाज में।''[16]

दक्ष प्रजापति सती एवं शंकर के प्रेम विवाह करने के कारण स्वयं को समाज में अपमानित अनुभव करते हैं। इसी कारण वे इज्जत से सिर नहीं नहीं उठा पाते। वर्तमान समय में भी माता पिता की इच्छा के विरूद्ध शादी करने के कारण बच्चों की अपेक्षा माता पिता को अधिक अपमानित होना पड़ता है। इसी कारण माता पिता अपने बच्चों से सभी रिश्ते नाते तोड़ देते हैं।

'एक कंठ विषपायी' में जहाँ प्रेम विवाह करने के कारण माता पिता द्वारा नाता तोड़ दिया जाता है वहीं भगवतीचरण वर्मा कृत नाट्य काव्य में कर्ण को उसकी माता द्वारा लोकलाज के डर से पैदा होते ही निष्कासित कर दिया जाता है। क्योंकि वह कुंती को कुमारी अवस्था में ही सूर्य द्वारा प्रदान कर दिया गया था। हमारे समाज में यदि कुमारी कन्या माता बन जाती है तो उसे समाज द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाता है। अन्यथा उसके चरित्र पर सवाल उठाये जाते हैं। इसी कारण कुंती ने समाज में अपमान होने के डर से कर्ण को त्याग दिया तथा युद्ध के समय कर्ण को यह बात इसलिए बताती है ताकि वह अपने सगे भाइयों का हत्यारा न बने। इसलिए कुंती स्वयं को कर्ण की दोषी स्वीकारते हुए कहती है –

''लोकलाज से फिर तुमको तजना पड़ा
लज्जित हूं मैं कर्ण, तुम्हारे सामने।''[17]

समाज के डर से मनुष्य अनैतिक कार्यों को करने से पहले सोचता है तथा जिस समाज में वह रहता है उसके अनुरूप ही उसे ढलना पड़ता है। समाज से अलग होकर व्यक्ति नहीं रह सकता। उसी समाज का हिस्सा होने के कारण लेखक समाज को अपने साहित्य में सूक्ष्मता से प्रकट कर पाता है। वहसमाज की कमियों एवं अच्छाइयों को वर्णित करता है। अच्छाइयों को कायम रखने एवं बुराइयों को समाप्त करने के लिए संघर्षरत रहता है।समाज का हिस्सा होने के कारण ही कवि सामाजिक आयाम के विविध रूपों को अपने साहित्य में परिलक्षित करता है। नाट्य काव्यों में भी कवियों ने सामाजिक समयबोध के विविध रूपों को प्रत्यक्ष किया है –

---

[16] वही॰, पृ॰ 11
[17] डॉ॰ भगवती चरण वर्मा, पृ॰ 153

4.4.1 समसामयिक मनुष्य का चित्रण –

साहित्य मानव जगत का सजीव चित्रण करने वाली वह सशक्त कला है जो मानवीय स्वप्नों और कल्पनाओं को रूप प्रदान करती है। समसामयिक घटनाओं से अपरिचित रहकर उच्च कोटि का साहित्य सर्जन संभव नहीं है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में आधुनिक मनुष्य के जीवन का कोई पहलू अछूता नहीं रहा है। आधुनिक मनुष्य की चिंताएं, भाग्यवाद के भरोसे न रहकर कर्मठता पर बल आदि का मार्मिक चित्राांकन किया गया है। आज का मानव समाज में सिर उठाकर जीना चाहता है। वह अपने साथ हो रहे सभी प्रकार के अन्याय एवं अत्याचारों को सहन नहीं करता। अपितु उनके विरूद्व अपनी आवाज उठाता है। वह सक्रिय रूप में समाज में अपनी भूमिका अदा करता है। परिस्थितियों के विरूद्ध लड़ने की क्षमता को विकसित करता है।

क. **कर्मठता पर बल**

वर्तमान समय में व्यक्ति भाग्य के भरोसे न रहकर कर्म पर बल देता है। सुभाषपंत कृत चिड़िया की आंख नाट्य काव्य का नायक एकलव्य कर्मठ एवं साहसी है। वह राजभवन में शुद्रों के साथ हो रहे व्यवहार को मौन रहकर स्वीकार नहीं करता। अपितु उसके विरूद्व विद्रोह का आह्वान करता है। वह ग्रामीणों में भी इस व्यवस्था के प्रति जागृति उत्पन्न करता है। अपने प्रति हो रहे दुर्व्यवहार को वह अपना भाग्य नहीं अपनी कमजोरी बताता है। जब तक वह निष्क्रिय बनकर उसकी मार झेलता है। जब राजभवन में एकलवय को प्रवेश नहीं करने दिया जाता तो वह इसका विरोध करता है और घाटी के लोगों में भी इसके विरूद्ध ऊर्जा का संवहन करता है। एकलव्य कहता है कि राजदरबार में राजा समझते हैं कि वे ही सब कुछ है। परन्तु वे भगवान नहीं है। उन्हीं के कारण सृष्टि नहीं चलती। यदि मुर्गा बांग न दे तो क्या सुबह नहीं होगी। परन्तु सुबह एक शाश्वत सत्य है । मुर्गे के बांग के बिना भी होगी। एकलव्य अपनी शक्ति के महत्व को दर्शाते हुए कहता है कि सृष्टि के केन्द्र में कोई अज्ञात शक्ति नहीं है, आदमी है। मनुष्य की कर्मठता को प्रकट करती हुई ये पंक्तियां द्रष्टव्य है।

''सृष्टि के केन्द्र में, कोई अज्ञात शक्ति नहीं
आदमी है
जो पहाड़ काटकर बनाता है समतल धरती
नदियों की दिशाएं मोड़ता है
और चीरता समुद्र की छाती
आदमी सत्य है
अक्षर और अनन्त है।[18]

[18] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 51–52

सुभाष पंत जी की भांति धर्मवीर भारती ने भी नाट्य काव्यों में समसामयिकता को चित्रित किया है। आज का मनुष्य कर्मठ है वह केवल भाग्य के भरोसे न रहकर निरन्तर कर्मशील रहता है। कोई भी व्यक्ति जब निष्काम भाव से इतिहास को चुनौती देता है तो उस दिन नक्षत्र भी अपना मार्ग बदल लेते हैं । कर्मठ व्यक्ति के प्रयत्नों से भाग्य भी बदल जाता है। भाग्य पहले से निर्धारित कोई वस्तु नहीं है। उसे प्रतिक्षण मनुष्य का निर्णय बनाता और मिटाता रहता है। कर्मठ मनुष्य में भविष्यवाणी को भी बदलने का सामर्थ्य है –

''जब कोई मनुष्य
अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को
उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है,
नियति नहीं है हर पल निर्धारित
उसको हर पल मानव निर्णय बनाता मिटाता है।''[19]

वर्तमान समय में मनुष्य कर्मवाद पर बल देता है उसे भविष्य के विषय में कुछ ज्ञान नहीं है कि हमारी स्थिति क्या होगी? हो सकता है हमें किसी कार्य में विफलता मिले । परन्तु यह असम्भव है कि हम कर्महीन होकर भाग्य के सहारे बैठे रहें 'धर्मवीर भारती' की भांति 'नरेश मेहता' जी ने भी संशय की एक रात में कर्मवाद पर बल दिया है। राम लक्ष्मण को समझाते हुए कहता है कि युद्धों में भले ही हम भयानक मृत्यु को प्राप्त हो, किन्तु युद्ध के परिणामों की चिंता किये बिना कर्म करना हमारी परिणति है।

मानव अब चुनौतियों को स्वीकार करने लगा है। वह ब्रह्मा द्वारा लिखे अपने भाग्य को अपने कर्मों से चुनौती देता है। संशय की एक रात नाट्य काव्य में लक्ष्मण के शब्दों से यह स्पष्ट है कि आज भाग्यवाद का खंडन और कर्मवाद को प्रतिष्ठित किया जाता है। लक्ष्मण युद्ध को अनिवार्य बताते हुए कहता है कि बिना कर्म किए ही हार जाना कायरता है। भले ही हम हार जाए या मृत्यु को प्राप्त हों परन्तु हमें कर्म करना ही चाहिए –

''कर्म की चुनौती मुझे स्वीकार है
बाह्मलेख को भी मैं, बाणों की चुनौती ही देता।''[20]

'एक कंठ विषपायी' में दुष्यंत कुमार ने भी कर्म सिद्धान्त की महत्ता को प्रतिपादित किया है। प्रस्तुत नाट्य–काव्य में विष्णु साहसी, कर्मठ एवं क्रियाशील व्यक्ति का प्रतीक है वह इन्द्र को सांत्वना देता है कि हमें कर्म करते रहना चाहिए। फल तो उसके बाद का विषय है। कर्म करते समयफल की आशा छोड़ देनी चाहिए। निःस्वार्थ भाव से प्रतिक्षण कर्म पर ही बल दिया गया है। भाग्यवाद के भरोसे बैठने वाला व्यक्ति कभी सफलता नहीं पा सकता है। कवि ने

---

[19] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 26
[20] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 22

कर्मठता पर बल अवश्य दिया है । परन्तु साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि हमारे कर्म सात्विक होने चाहिए। इसीलिए विष्णु इन्द्र से धनुष लेकर शिव पर बाण छोडते हुए कहता है :

''देवराज ।
तुम अपना बाण मुझको दो,
मेरे मत में
पहले कर्म हुआ करता है –
फिर उसकी व्याख्या होती है।''[21]

अतः स्वतन्त्र्योत्तर कवियों ने भाग्यवाद की अपेक्षा कर्मवाद को अधिक महत्व दिया है। भाग्यवाद को अपनाने वाला व्यक्ति कमजोर एवं आलसी होता है। परन्तु कर्मठ व्यक्ति अपना भाग्य स्वयं बनाते हैं।

ख. मनुष्य की संत्रास एवं पीड़ा का चित्रण

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने वर्तमान समाज में व्याप्त मनुष्य के संत्राास एवं पीड़ा को चित्रित किया है। वर्तमानसमय में मनुष्य राजनीतिक दबावों एवं अभावों के कारण घुटन एवं कंठा से युक्त जीवन जी रहा है। एक कंठ विषपायी में सर्वहत के माध्यम से ऐसे ही पीड़ित व्यक्ति को चित्रित किया है जो समाज का हिस्सा होने के कारण समाज से जुड़ा हुआ है। परन्तु दक्ष के नगर के विध्वसं के साथ ही उसकी दशा भी मार्मिक हो जाती है। वह दक्ष के नगर को अपनी आंखों से नष्ट होते हुए देखता है। जिस कारण वह पागल सा हो जाता है तथा धीरे–धीरे वह देवलोक में इन्द्र एवं ब्रह्मा की सभा में पहुंच जाता है। जहां युद्ध की विभीषिका पर विचार विमर्श चल रहा है। वह अपनी पीड़ा एवं संत्रास का चित्रण देवलोक में करता है। समाज में रहने वाले साधारण जन की पीड़ा को कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से रूपापित किया है ।

''किन्तु मैं बुभुक्षित था
इसलिए आंख जब खुली तो मैं
दो रोटी पाने की आशा में
इतना सब रक्त स्त्राव सहकर भी
यहां तक चला आया।''[22]

साधारण जन की समाज में स्थिति के रूपायित किया गया है कि वर्तमान समय में व्यक्ति भूख को शांत करने के लिए कितनी पीड़ाओं से जूझता है। अपना खून बहाकर भी वह जीने के लिए भूख शांत करना चाहता है। फिर भी व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की

[21] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 35
[22] दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 67

पूर्ति करने में असमर्थ रहता है। इतना कष्ट सहन करने के बाद साधारण जन की यह मनोव्यथा स्वाभाविक है। इसी कारण सर्वहत क्षत–विक्षत अवस्था में लड़खड़ाता हुआ देवलोक में प्रवेश करता है तथा व्यंग्यात्मक भाषा में ध्वस्त नगर की स्थिति का मार्मिक चित्रण करता है। उसे अपनी दासवृत्ति एवं निरर्थकता का तीक्ष्ण बोध होता है। दक्ष की प्रजा होने के कारण उसे अपने राजा की भूलों का उत्तरदायित्व वहन करना पड़ताहै। इसलिए वह उन्हें अपने घाव दिखाकर दो रोटी की मांग करता है और सत्ताधारी शासकों द्वारा उसे डांट–फटकार कर भगा दिया जाता है। यही आज के समसामयिक मानव की पीड़ा है।

कवि सुमित्रानन्दन पंत ने भी अपने नाट्य–काव्य, 'स्वप्न और सत्य' में जीवन की समस्या कुंठा, विडम्बना, अमानुषिकता और घृणा का वर्णन किया है। कलाकार किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है। दुःस्वप्न के बाद कवि पुनः आदर्श जन समाज की कामना करता है। रण की कोलाहल, शोषण, उत्पीड़न से कलाकार क्षुब्ध हो उठता है। अंधकार गहन अंधकार है कहकर कवि व्याकुल हो उठता है। स्वप्न एवं सत्य में कवि विषाद कलह, दारिद्रय आदि का चित्र इस प्रकार प्रस्तुत करता है –

''हरी, कुटिल मत, भेदभाव से भरे विषैले,
पर–द्रोही, प्रतिशोध–स्तुधित, निर्बल के पीड़क
कलह विषाद विनोदी, घोर विषयकता प्रेमी
निरूद्यमी, निःसत्व, निरूत्साही, निराशमन
रोग शोक दारिद्रय, दैनय के जीवित पंजर
निखिल, क्षुद्रताओं के जीवन मृत प्रतीक से।''[23]

अतः कवि ने आधुनिक मनुष्य का कुंठा, पीड़ा एवं दुविधाओं का चित्रण, नाट्य–काव्यों में किया है। भेदभाव से भरे इस विषैले समाज में हर स्थान पर द्रोही पीड़क, निर्बल, दारिद्रय के कारण व्यक्ति को घुटन एवं पीड़ा को सहन करना पड़ता है। यह उसकी नियति बन चुका है। भूख, गरीबी की यंत्राणा भी उसे समय–समय पर झेलनी पड़ती है। आधुनिक समय में चारों तरफ गहन अंधकार छाया हुआ है। मानव ही मानव के दुखो का कारण बनता जा रहा है। समाज में संवेदनहीनता आ रही है।

ग. भावात्मक संबंधों का अभाव :–

आधुनिक समाज में संवेदना की कमी के कारण भावात्मक संबंधों का अभाव होता जा रहा है। आपसी संबंध भी अब स्वार्थों पर टिके हुए है। मनुष्य समाज में अपने स्वार्थों के कारण ही संबंध बनाता है। परिवारों से संबंधों में विच्छेद भी इसी कारण होता जा रहा है। वर्तमान

[23] डॉ॰ सुमित्रानन्दन पंत, स्वप्न और सत्य, पृ॰ 106

समाज में व्यक्ति अपने स्वार्थों के कारण अपने बच्चों से ही रिश्ता समाप्त कर देते हैं। एक कंठ विषपायी में दक्ष भी अपनी पुत्री सती से इसी कारण रिश्ता समाप्त कर देता है कि वह अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध जाकर प्रेम विवाह कर लेती है। समाज में अपनी प्रतिष्ठा को चोट लगने पर वह यज्ञ का निर्माण करता है जिसमें अपने ही जामाता शिव को नहीं बुलाता। वीरिणी के बार–बार समझाने पर भी दक्ष अपनी पत्नी की बातों को अनसुना कर देता है। तब वीरिणी कहती है कि जब मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उसकी बुद्धि पहले ही मंद पड़ जाती है और वह कोई भी कार्य उचित समय से नहीं कर पाता। इस विषय में वीरिणी के विचार स्पष्ट हैं–

''मैं समझ गयी दुर्दिन जब आते हैं
तो पहले, व्यक्ति का स्वतन्त्र बोध
चिन्तन और प्रज्ञा हर लेते हैं।
अनायास मन की वैचारिकता स्थितियों को
प्रतिबंधित कर देते हैं। पार्श्व में प्रसंगों में
लघुता भर देते हैं।''[24]

जब मानव अत्याचार, अन्याय को सहन करते करते थक जाता है तो वह विद्रोह एवं अन्याय के प्रति संघर्ष की राह चुनने की अपेक्षा स्वयं को इसका आदि बना लेता है तथा शासक के इशारों पर चलते–चलते स्वयं को थका हुआ सा महसूस करता है। उसकी भावनाएं एवं संवेदना समाप्त हो जाती हैं। वह अपने विरूद्ध हो रहे शोषण को अपनी नियति मानकर स्वीकार कर लेता है। तथा अपने जीवन को निरर्थक बना लेता हैं। अंधायुग में कविवर धर्मवीर भारती जी ने मनुष्य में हो रही संवदेना की कमी एवं जीवन की निरर्थकता का भली–भांति प्रकट किया है –

कुछ भी अर्थ नहीं था
जीवन के अर्थहीन, सूनेगलियारे में
पहरा दे–देकर, अब थके हुए है हम
अब थके हुए हैं हम।''[25]

जब मनुष्य जीवन में निरूत्साहित एवं संवेदनहीन हो जाता है तो उसे अपना जीवन भी भार स्वरूप लगने लगता है। भगवतीचरण वर्मा कृत नाट्य काव्य तारा में भी कवि ने तारा एवं बृहस्पति में माध्यम से पति पत्नी के बीच के भावनात्मक संबंधों के अभाव को दर्शाया है इसी के कारण तारा बृहस्पति के शिष्य चन्द्रमा के साथ संबंध बनाकर अनैतिक कार्य करती है।

---

[24] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 35
[25] डॉ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 25

4.5 स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में निहित दलित प्रश्न :–

दलित विमर्श आधुनिक समाज का बहु चर्चित विषय बना हुआ है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में शोषित समाज के स्वर का उद्‌बोधन है। दलित प्रश्न पर चिंतन से पहले हमें दलित शब्द का अर्थ समझ लेना चाहिए। डॉ॰ माता प्रसाद के अनुसार दलित शब्द का अर्थ है – ''दबाया गया, सताया गया, गिराया गया, उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, दमित, अपमानित बहिष्कृत आदि है। इनमें अनुसूचित जातियों के साथ–साथ हिन्दू वर्ण व्यवस्था में दूसरे दर्जे में आने वाली स्त्रियां एवं शूद्र कहे जाने वाली पिछड़ी जातियां भी हैं।''[26]

स्वातन्त्र्योत्तर रचनाकारों के साहित्य में अन्याय एवं शोषण के शिकार पीड़ित एवं दुखी मानव के प्रति संवेदना परिलक्षित होती है। शोषित वर्ग को ही समाज में हुए हर नुक्सान का खामियाजा भुगतना पड़ता है। मानव जब अत्याचार, अन्याय को सहन करते–करते थक जाता है तो वह विद्रोह एवं अन्याय के प्रति संघर्ष की राह चुनता है जब शासक द्वारा प्रजा का शोषण अधिक होता है तब वह अन्याय के प्रति संघर्ष की राह चुनता है। नरेश मेहता कृत नाट्य–काव्य संशय की एकरात में रावण के अन्याय को सहन करती हुई प्रजा ने राम का सहारा पाते ही शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई है। हनुमान इसीलिए राम को कहते है कि रावण से युद्ध आपकी व्यक्तिगत समस्या नहीं है अपितु ये सब बनवासी रावण के अन्याय एवं अत्याचार का प्रतिशोध लेना चाहते हैं। इसी कारण ये महाबांध का निर्माण कर रहे हैं। यह बांध मानव की विद्रोह रूपी भावना का परिचायक है। अत्याचार एवं अन्याय के विरूद्ध यह सेतु मानव जाति के विद्रोह भाव का पहला अद्‌भूत प्रतीक है। इसके माध्यम से लेखक ने अपनी मार्क्सवादी विचारधारा को प्रकट किया है

''वह महासेतु
जोकि प्रथम आश्चर्य सृष्टि का
मानव के विद्रोह भाव का
प्रथम, किन्तु
अद्‌भुत प्रतीक है।''[27]

स्वतन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में रचनाकारों ने जहाँ दलित समाज की पीड़ा, व्यंजना एवं कष्टों को परिलक्षित किया है वहीं आधुनिक बोध को प्रकट करते हुए शोषण के विरूद्ध संघर्ष एवं क्रांतिकारी भावों को भी प्रकट किया है।

---

[26] डॉ॰ माता प्रसाद, दलित साहित्य में प्रमुख विधाएँ (भूमिका) पृ॰ 2
[27] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 76

4.5 दलित, पीड़ित एवं शोषितों की पीड़ा की व्यंजना :–

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही राष्ट्र में पूंजीवादी व्यवस्था का उदय हुआ जिसके कारण सम्पूर्ण समाज दो भागों शोषित एवं शोषक वर्ग में विभाजित हो गया। शोषित वर्ग में गरीब, निर्धन, मजबूर, शुद्र आदि आ गए तथा शोषक वर्ग में पूंजीपति, उद्योगपति, जमींदार, क्षत्रिय आदि। शोषक वर्ग द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गरीब, निर्धन व दलितों का भरपूर शोषण किया गया तथा वर्तमान समय में शोषण का स्वरूप अवश्य बदला परन्तु शोषण आज भी ऐसे ही किया जाता है। शोषित वर्ग की महत्वपूर्ण समस्या आज भूख बन चुकी है जो प्राचीन काल से ही चली आ रही है और वर्तमान में भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। आज व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा और मकान) के लिए संघर्षरत रहता है। शासक उन्हें केवल आश्वासन देता रहता है। ये आश्वासन वर्तमान में तो क्या भविष्य में भी आश्वासन मात्र ही बनकर रह जाते हैं। एक कंठ विषपायी में भूख की समस्या को सर्वस्त के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। अभावों से परेशान हो सर्वहत ब्रह्मा के समक्ष अपनी समस्या रखता है। उस पर उसे आश्वासन ही मिलता है इसी कारण सर्वहत प्रजा के समक्ष जाकर कहता है –

''हम सब भूखे मर जाएंगे एक रोज
पेट को बजाते
और भूख–भूख चिल्लाते।''[28]

ब्रह्मा द्वारा आश्वासन पाकर सर्वहत कहता है कि भू लोक या देवलोक शासक वर्ग के लिए सब कुछ उपस्थित होता है और शोषित वर्ग के लिए कुछ भी नहीं। वह ब्रह्मा से उचित न्याय की मांग चाहता है। परन्तु साथ ही वह व्यंग्यात्मक भाषा में यह स्पष्ट भी कर देता है कि साधारण व्यक्ति को कहीं भी न्याय नहीं मिलता। साधारण व्यक्ति को ही सभी प्रकार का अभाव, अत्याचार, अनैतिकता, का सामना करना पड़ता है। चाहे वह देवलोक हो या पृथ्वीलोक। आम जनता के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। इसी कारण सर्वहत कहता है –

''चाहे वह दक्षलोक
अथवा देवलोक
साधारण लोगों को कहीं
न्याय नहीं मिलता।''

गरीब व्यक्ति के लिए गरीबी अभिशाप बन जाती है। वह निरन्तर संघर्ष करने पर भी शोषक वर्ग के अत्याचार एवं भूख जैसी समस्याओं के साथ निरंतर जूझता रहता है। इसी को वह समय के साथ–साथ भाग्य भी समझ लेता है। सुभाष पंत कृत 'चिड़िया की आँख' मुक्ति सघर्ष का काव्य है। इसमें कवि ने शोणभद्र, एकलव्य धनिक के माध्यम से दलितों की पीड़ो को

[28] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 64

प्रकट किया है। राजतंत्र में दलितों एवं अछूतों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। राजाओं द्वरा उनके राजभवन में प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी जाती है। जातिगत भेदभाव का यह प्रश्न वर्तमान स्थितियों में वैसा ही बना हुआ है। आज भी जातिगत आधार पर राष्ट्र में भेदभाव हो रहे हैं। निम्न जातियों को संविधान में अनेक अधिकार दिये गए हैं। परन्तु वास्तव में उन्हें इन अधिकारों से वंचित रखा जाता है। प्राचीन समय में जहाँ प्रत्यक्षतः इनका शोषण होता था वहीं वर्तमान समय में भी इनका शोषण होता है। बस अब शोषण का स्वरूप बदल गया है क्योंकि अब ये वर्ग शिक्षित होकर उभरने लगा है तथा अपने साथ हो रहे अन्याय को समझने लगा है। इनके राजमहलों में प्रवेश पर प्रतिबंध होता है। वर्तमान समय में भी राजनेता के चाटुकारों द्वारा साधारण जन को राजनेताओं से मिलने पर पाबंदी लगा दी जाती है। राजा के प्रहरियों द्वारा बाहर फेंक दिया जाता है। इसलिए धनिक शोणभद्र से कहता है –

''एक कैसे हुई हमारी जाति
तुम अन्तःपुर के वासी
हम धकियाये जाते राजद्वार से
कुत्तों की तरह।''[29]

राजभवन में होने वाले शास्त्रार्थों में भी दलित एवं शोषित व्यक्ति को भाग नहीं लेने दिया जाता। 'चिड़िया की एक आंख' में एकलव्य ऐसा ही पात्र है जो शास्त्रार्थ का ज्ञाता है। इसी कारण वह अपने समाज को आगे बढ़ाने के लिए राजभवन में शास्त्रार्थ के लिए जाता है जिसे वापिस यह कहकर लौटा दिया जाता है कि दलित शास्त्रार्थ में भाग नहीं ले सकते। एकलव्य कहता है कि यदि मुझे शास्त्रार्थ में भाग लेने दिया जात तो मैं उन्हें हराकर अपनी सत्यता सिद्ध कर सकता था। हम शोषण के दूर्ग तोड़ सकते हैं परन्तु हमें बोलने तक का अवसर नहीं दिया जाता–

''तोड़े जा सकते हैं शोषण के दुर्ग
फिर हमें तो
बोलने तक का अधिकार नहीं है।''[30]

इस प्रकार दलित एवं शोषित वर्ग को उठने एवं आगे बढ़ने का अधिकार नहीं दिया जाता । यदि वे अपने संघर्ष के माध्यम से आगे बढ़ने का प्रयत्न करें तो भी उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया जाता।

शम्बूक नाट्य–काव्य में आर्यों की दोषपूर्ण एवं पक्षपातपूर्ण समाज व्यवस्था को दर्शाया गया है। आर्यों ने समस्त शास्त्र विद्या एवं उच्च मंत्र विद्या पर निरकुंश आधिपत्य बनाए रखा है। केवल ब्राह्मण तथा क्षत्रिय उच्च्वर्गीय सवर्णों द्वारा शास्त्र विद्या अर्जुन पर उनका पूर्ण अधिकार

[29] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 22
[30] डॉ॰, सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 33

सहन नहीं कर सके तब उसने पूरे समर्पण भाव से गुरू द्रोण की मुर्ति स्थापना कर धनुर्विद्या, अर्जित कर ली। तब गुरू द्रोण ने एकलव्य के भोलेपन, मासूमियत गुरू के प्रति सेवाभाव तथा पूजा एवं भक्ति का अनुचित लाभ उठाते हुए उससे गुरू दक्षिणा में दाहिने हाथ का अंगूठा माँग लिया। इस पक्षपात पूर्ण व्यवहार को नियती का विधान बनाकर स्वयं को सही ठहराया। कवि के अनुसार, नीचता, स्वार्थपरता का ऐसा पराकाष्ठा तक पहुंचा हुआ। अन्य कोई उदाहरण देखने को नहीं मिलता । उच्च वर्ग के शिक्षक का दलित शिष्य के प्रति घृणित रवैया अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। एकलव्य सवर्णों से अपना अधिकार मांगने के लिए संघर्ष करता है। द्रोण द्वारा उसका अँगूठा माँगकर उसके इस संघर्ष को समय से पहले ही दबा दिया जाता है। सवर्णों के अत्याचार अन्याय के गतिशील, शोषण प्रसंग की परम्परा को कवि ने ऐतिहासिक तथ्यात्मकता के साथ प्रदर्शित किया है। कवि कहता है कि यदि एकलव्य शुद्र, निषाद न होकर उच्च कुल में उत्पन्न होता तो आचार्य द्रोण का उसके प्रति व्यवहार और भाव कुछ ओर ही होता उसे छलपूर्वक निर्बल करने की चेष्टा नहीं की जाती। गुरू का शिष्य के प्रति ऐसा पक्षपातपूर्ण व्यवहार देखकर एकलव्य अपमान एवं अवमानना की आग में बराबर धधकता रहता है। इसलिए शम्बूक का प्रेत चाहता है कि एकलव्य का रक्त रंजित अंगूठा ज्वाला में जलते शम्बूक के माथे पर रक्त तिलक कर दे और यह विश्वास दिला दे कि आर्यों की कुव्यवस्था का शिकार वह अकेला नहीं हुआ है अपितु युगों से लेकर आज तक कोटिजन शुद्र सवर्णो की नीचधर्मों अभिजात मूलक विचारधारा का शिकार होते आए हैं '–

''मेरे अपने ठंडे पड़े माथे पर
शिव के तीसरे नेत्र की तरह
वह रक्त तिलक
प्रज्जवलित होते ही
कर देगा भस्पसात, झूठें अहंकार की
पूरी वासना, देह,
निःसन्देह ।[31]

शम्बूक कहता है कि शुद्रों का संघर्ष मेरी मृत्यु के बाद भी ऐसा ही चलना चाहिए। इसलिए शम्बूक कहता है कि तिलक करते ही शिव के तीसरे नेत्र की तरह विरोध एवं उत्कट विद्रोह की एक ऐसी ज्वाला फूटेगी जो समस्त वासनाओं को समस्त भेदभाव, विगलित विचार दर्शन को पक्षपातपूर्ण कर्म के संवाहकों को उनकी देह आत्मा को जलाकर राख कर देगी। शुद्र राम के राजा बनने पर प्रसन्न होते हैं कि अब समता का भाव जागृत होगा पर राम भी शम्बूक की हत्या इसलिए करने देता है क्योंकि शम्बूक एक दलित है।

---

[31] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 102

'संशय की एक रात' में भी राम द्वारा रावण से युद्ध करने की स्थिति में जब राम दुविधा ग्रस्त हैं तो छोटे–छोटे सामान्ती राज्यों के व्यक्ति, गुलाम परिवार बनवासी इसलिए राम का साथ देने को तैयार हो जाते हैं क्योंकि वे अकेले रावण के अत्याचारों का सामना नहीं कर सकते। राम द्वारा उन व्यक्तियों की सुप्त भावनाओं में क्रांति का भाव जागृत हो जाता है। राम के कारण ही रावण के अत्याचारों एवं अन्याय से पीड़ित दक्षिण प्रदेश के इन असंख्य साधारण लोगो में स्वाधीनता एवं आजादी के भाव का बोध उत्पन्न हुआ है। इसी वक्तव्य को कवि ने इस प्रकार स्पष्ट किया :–

रावण पीड़ित दक्षिण प्रदेश के
असंख्य साधारण जन को
स्वतन्त्र्य भाव–वर्चस्व बोध से भरा।[32]

भगवतीचरण वर्मा कृत नाट्य काव्य में भी कर्ण के माध्यम से शुद्रों के साथ हो रहे अमानवीय चित्र को प्रस्तुत किया गया है। जिस प्रकार 'चिड़िया की आंख' में दलितों को राजभवन में प्रवेश नहीं करने दिया जाता । उसी भांति कर्ण नाट्य–काव्य में कर्ण को भी द्रौपदी स्वयंवर में भाग लेने से यह कहकर रोक दिया जाता है कि वह सूत–पुत्र है तथा कर्ण को शुद्र होने के कारण भरी सभा में लांछित होना पड़ा। इस अपमान को कर्ण ने अपने अन्दर दबाये रखा तथा महाभारत के युद्ध के समय कहता है कि –

मैं सूतपुत्र?–मैं मनुष्य मैं पावन,
निष्कलंक मैं अकलुष मैं व्रतधारी
जीवित हूं निज भुज दण्डों के बल पर
मैं राज्य लोभ से बना कभी न भिखारी।''[33]

हमारे समाज में दलित, शुद्र, निर्धन होना भी एक अभिशाप है क्योंकि उनका प्रतिदिन शोषण होता है और ये घृणित एवं दुविधाग्रस्त जीवन जीने पर मजबूर होते हैं। समाज में इन्हें कभी सम्माननीय दृष्टि से नहीं देखा जाता ये सदैव हेय एवं घृणा के पात्र ही समझे गये हैं।

निष्कर्षतः शुद्र, दलित एवं शोषित व्यक्ति समाज में सदैव अपने अधिकारों से विहीन ही रहा है। उसे उच्च समाज द्वारा सदैव प्रताड़ित किया गया है। क्योंकि समाज में उन्हें दोयम दर्जे का माना जाता है। पूंजीपति एवं शासकों द्वारा उनका शोषण किया जाता रहा है। आधुनिक समय में शोषण के विरूद्ध आवाज उठने के कारण शोषण कम होने लगा है परन्तु पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। बदलते समय के साथ शोषण का स्वरूप भी बदल गया । अब पूंजीपतियों का स्थान राजनेताओं ने ले लिया हैं और शोषितों के स्थान पर आम जनता आग गई है।

---

[32] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 77
[33] डॉ॰ भगवती चरण वर्मा, कर्ण, पृ॰ 150

4.5.1 शोषण के विरूद्ध संघर्ष : –

निम्न वर्ग एवं दलित समाज शोषण का शिकार होते–होते इतना उद्विग्न हो गया कि अब वह दबकर नहीं सबके समान इज्जत से उठकर जीना चाहता है। उसने अपने विरूद्ध होने वाले अन्याय के विरूद्ध हथियार डालने की अपेक्षा हथियार उठाना अधिक उचित समझा। शोषित जनता निरन्तर संघर्ष करती रहती है। फिर भी समाज में सम्माननीय जीवन व्यतीत नहीं कर पाती। वहीं भ्रष्ट नेता घिनौने अपराध करके भी समाज में अपना सिर ऊँचा करके घूमते हैं। वंचित एवं शोषित मनुष्य अब समझ गया है कि जब तक शोषण के विरूद्ध आवाज नहीं उठाई जाती तब तक परिस्थितियों को नहीं बदला जा सकता, इसलिए 'चिड़िया की एक आँख' में एकलव्य कहता है कि हमें अपनी शक्ति को जोड़कर एक नयी शक्ति को निर्मित करना होगा। जब मनुष्य का साहस उसके संघर्षों के साथ खड़ा होता है तो वह एक निर्णायक शक्ति बन जाता है। मानव में एक नया हौंसला भरता है। अन्याय के विरूद्ध लड़ने के लिए एवं संघर्ष करने के लिए। इसीलिए एकलव्य माधवी से कहता है कि –

''आओ हम सब मिल जाये
लिये हाथ में तीर तलवार
उनसे पूछे यही सवाल
वही गात है वही चाम है
नसों में लाल खून ही बहता है
फिर हमारी हत्याएं करने का
उनको कैसे है अधिकार।''[34]

जब भगवान ने मनुष्य को समान बनाया है तो फिर मनुष्य द्वारा क्यों भेदभाव उत्पन्न किया जाता है। पाण्डवों द्वारा निषाद मां एवं बच्चों को सत्ता पाने के लिए जिंदा जला दिया जाता है। शम्बूक का रक्त भी राम द्वारा इसीलिए बहाया जाता है क्योंकि वह राजनीतिक षडयंत्रों के विरूद्ध संघर्ष करता है। मालती कहती है कि शम्बूक का वहां नहीं किया जा सकता। जब तक राजनीति का दमन चक्र घूमता रहेगा तब तक किसी ना किसी रूप में शम्बूक जीवित रहेगा। त्रेता का शम्बूक आज का एकलव्य है और उसका लक्ष्य मुक्ति के लिए संघर्ष करना है। ग्रामीण वासियों का संघर्ष शोषण के अंत की कामना करता है। अब वह केवल व्यक्तिगत रूप से स्वतन्त्र नहीं होना चाहता बल्कि सम्पूर्ण वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करता है इसलिए माध्वी कहती है कि शम्बूक आज भी एकलव्य बनकर सबकी मुक्ति चाहता हैः–

''अपनी मुक्ति नहीं ढूंढता
सबकी मुक्ति के लिए

---

[34] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 67

चुनता है सीधा संघर्ष।''[35]

एकलव्य के संघर्ष के माध्यम से कवि ने आधुनिक मानव के संघर्ष को चित्रित किया है। आधुनिक प्रजातंत्र के शोषण का शिकार होता मानव उसके विरोध में अपनी आवाज बुलंद करता है। मनुष्य अब जान गया है कि शक्ति का केन्द्र वह स्वयं है। वही अक्षर और अनन्त है। वह अपने आपको पहचान गया है। जान गया कि विजय उसकी ही होती है जो अपने लक्ष्य को केन्द्र में रखकर निरन्तर संघर्ष करता है।

मनुष्य वर्तमान समय में अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहता है। प्राचीन समय के दलितों की भाँति जीवों की तरह निर्मूल नष्ट नहीं होना चाहता। वह अपने हक एवं अधिकारों के लिए लड़ना चाहता है तथा संघर्ष के द्वारा अपना हक छीनना चाहता है। शोषित मनुष्य को शासक तक नहीं पहुंचने नहीं दिया जाता । वह बार–बार शासक की आज्ञा का इंतजार करता है तथा निर्णय न होने की स्थिति में वह घंटों गुजार देता है। उन्हें जीवन भर प्रतीक्षा के अलावा कुछ नहीं मिलता। एक कंठ विषपायी में शोषित वर्ग ब्रह्मा एवं इन्द्र के निर्णय का इंतजार कर रही है परन्तु बहुत समय बाद भी कोई निर्णय न आने से जनता ऊब चुकी है। परन्तु शासक वर्ग लम्बी बहस एवं विमर्श में अपना समय बर्बाद कर रहा है। तभी जनता परेशान होकर नारेबाजी करने लगती है तथा शासक को कोसती हुई उस पर व्यंग्य करती है। शोषण के विरूद्ध जनता के पागलपन को कवि ने इस प्रकार रेखांकित किया है–

''महादेव शंकर की सेनाएं
सीमा में दूर तक चली आयी
अनगिणत घर उजड़ गये
धरती हो गयी लाल
शासन को कोसती जनता पागल है।''[36]

शम्बूक नाट्य–काव्य में भी राम द्वारा शम्बूक की हत्या इसलिए की जाती है क्योंकि वह अछूत है। अछूत द्वारा तप करना पाप माना जाता है। क्योंकि तप ऋषियों एवं मुनियों द्वारा ही करने योग्य कार्य माना जाता है। इसीलिए राम शम्बूक से कहता है कि तप शूद्र का कार्य नहीं है। शूद्र का कार्य तो क्षत्रियों की सेवा करना ही है। शम्बूक राम से प्रश्न करता है कि शुद्र द्वारा किये जाने से तप दुष्कर्म कैसे हो गया। वही कार्य जो मुनियों द्वारा किये जाने पर धर्म कहलाता है। अछूत द्वारा करने से अधर्म कैसे हो गया। वह तप अपराध कैसे हो गया जिसके कारण मुझे दण्ड दिया जा रहा है। शम्बूक राम की शासन व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाता हुआ कहता है कि –

''कौन शासक भूल अपनी जानता

---

[35] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 49
[36] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, 'एक कंठ विषपायी', पृ॰ 120

सदा अपराधी प्रजा को जानता
राम तुम राजा बने किस हेतु हो?
व्यष्टि और समष्टि मन के हेतु हो ?
शूद्रघाती बने, करके क्रोध,
क्या तुम्हारा यही समता बोध?''[37]

इसी प्रकार कर्ण नाट्य काव्य में भी कर्ण को योद्धा, वीर, पराक्रमी होते हुए भी द्रौपदी स्वयंवर में इसलिए भाग नहीं लेने दिया जाता क्योंकि वह सूत–पुत्र है। इसी अपमान एवं घृणां का बदला लेने के लिए उसे महाभारत के युद्ध में भाग लेना पड़ता है। जहाँ प्राचीन काल में शोषित जन राजा के शोषण का अधिकार होते थे। वहीं आधुनिक समय में शूद्रों एवं अछूतों के साथ दुर्व्यवहार करने पर राजतंत्र की नींव हिला दी जाती है। चिड़िया की आंख में धाटी में रहने वाले अछूत लोग अभाव ग्रस्त जीवन जीते हैं। परन्तु जब पाण्डवों द्वारा निर्दोष निषाद मां समेत उसके बच्चों की हत्या कर दी जाती है तो धनिक उग्र हो उठता है वह राजा के प्रति क्रोधित है तथा अभाव युक्त जीवन जीते हुए भी शहर से जाकर लोहा खरीद कर लाता है ताकि उससे अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण कर अपना बचाव कर सके। इसलिए वह कहता है–

''ये अभाव बहुत छोटे है
पर अस्त्र–शस्त्र के अभाव में
हम पशुवत मारे जाएंगे
इसलिए मैं खरीद लाया लोहा
इसे हम शस्त्रों में ढालेंगे।''[38]

मनुष्य अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहा है। वह अब मूक पशु की भांति संघर्ष एवं शोषक के अत्याचार नहीं झेलता अपितु उनके विरूद्ध आवाज भी उठाता है। यह संघर्ष अचानक से उठी। कोई लहर नहीं अपितु प्राचीन काल से उठती आई मुक्ति की गाथा है। जो वर्तमान समय में एक क्रांतिकारी रूप धारण कर चुकी है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में कवि द्वारा दलितों एवं शोषित वर्ग की दयनीय स्थिति को तो प्रकट किया ही है। साथ ही उनकी मनोदशा का भी मार्मिक चित्रण किया है।

निष्कर्षतः शोषण के विरूद्ध क्रांति की चेतना के स्वर नाट्य काव्यों में परिलक्षित होते हैं। मनुष्य निरतन्तर संघर्ष करता हुआ अपने जीवन में आगे बढ़ रहा है। शिक्षा ने भी मनुष्य में समता का भाव लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज शोषक कोई राजा या शासक सवर्ण ही नहीं अपितु दलित भी हो सकता है। अब शोषण का स्वरूप बदल गया है। शोषक अब राजनेता है। पूंजीपति एवं भ्रष्ट अधिकारी है एवं शोषित अब आम जनता बन चुकी है।

---

[37] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 51
[38] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 87

दलित संविधान में दिए गए अपने अधिकारों को समझने लगे हैं एवं शोषित अब आम जनता बन चुकी है। दलित संविधान में दिए गए अपने अधिकारों को समझने लगे हैं एवं उनका प्रयोग भी करते हैं। जो आधुनिक समय बोध को रूपापित करता है।

4.6 सामाजिक संबंधों के ह्रास का वर्णन :–

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। परिवारों से ही समुदाय एवं समाज बनता है। आधुनिक समय में टूटते परिवारों की व्यथा से सब परिचित है। वर्तमान परिवेश के समाज में संबंध भी स्वार्थों पर आधारित हो गए हैं। परिवार का प्रत्येक सदस्य भी स्वार्थों के कारण ही एक दूसरे के सम्पर्क में रहता है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में इन्हीं स्वार्थपूर्ण संबंधों को चित्रित किया गया है। आज स्वार्थ में अंधे होकर एक भाई दूसरे भाई की जान का प्यासा बना हुआ है। मीडिया के माध्यम से प्रतिदिन ऐसे समाचार सुनने को मिलते हैं जब भाई द्वारा भाई की हत्या जमीन एवं पैसे के लिए कर दी जाती है।

अंधायुग में चित्रित धृतराष्ट्र एवं गांधारी पुत्रमोह के कारण इतने अंधे हो जाते हैं कि उन्हें दुर्योधन की गलत राह भी सही प्रतीत होती है। युद्ध का कारण भी उनका निजी स्वार्थ एवं अंधापन ही है। आज पारिवारिक कलह, आपसी द्वेष एवं ईर्ष्या इतनी अधिक बढ़ गई है कि जिससे भाईचारे की भावना, पारस्परिक मेलजोल एवं मानवता जैसे मूल्यों का हनन हो रहा है। निजी स्वार्थ भयंकर युद्धों को चुनौती दे रहे हैं। विवेकहीनता एवं स्वार्थ अपने परिवार के संबंधों को खोखला कर देती है। महाभारत का युद्ध इसी स्वार्थ एवं विवेकहीनता का दुष्परिणाम है। कौरव एवं पाण्डव भाई–भाई होते हुए भी निजी स्वार्थों के कारण भयंकर युद्ध करने को तैयार है। यह कृति आधुनिक समय बोध से सम्पृक्त है। कौरव एवं पाण्डव दोनो ही मर्यादा तोड़ते हैं। दोनो ही युद्ध में अपना–अपना सम्मान, शौर्य, समृद्धि यश सब कुछ दांव पर लगा देते हैं। इन्हीं खोखले पारिवारिक संबंधों को लेखक ने अंधायुग नाट्य काव्य में चित्रित किया है। पाण्डव एवं कौरव सगे भाई होते हुए भी निजी स्वार्थ के कारण युद्ध के मैदान में आमने–सामने खड़े हैं–

> ''टुकड़े–टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा
> उसको दोनो ही पक्षों ने तोड़ा है
> पांडव ने कुछ कम कौरव ने कुछ ज्यादा
> यह रक्तपात अब कब समाप्त होना है
> यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
> दोनो पक्षों को खोना ही खोना है।''[39]

---

[39] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 13

महाभारत का युद्ध अंधी ममता एवं स्वार्थ का ही दुष्परिणाम है। स्वार्थ मनुष्य को विवेकहीन बना देता है। किसी के प्रति भी अनावश्यक मोह मनुष्य को अनैतिक एवं घातक बना देता है। अपने पुत्रों के प्रति गांधारी का अत्यधिक मोह भी कौरवों को अहंकारी, अनैतिक एवं भ्रष्ट बना देता है। गांधारी अपने पुत्रों को परिवार का महत्त्व सिखाने की अपेक्षा उनके गलत आचरण में उनका साथ देती रही जिस कारण कौरव अपने ही परिवार के विरूद्ध षडयंत्र करने में लगे रहे। जब युद्ध में एक–एक करके उसके सभी पुत्र मारे जाते हैं तो वह दुर्योधन को अपनी आंखों की दिव्य ज्योति से वज्र बना देती है। ताकि पांडव उसे मृत्यु न दे सके। इन शब्दों के माध्यम से माता का अपने पुत्र के प्रति स्वार्थ एवं मोह परिलक्षित होता है –

''मार नहीं पायेंगे कृष्ण उसे
मैने उसे देखकर
वज्र कर दिया है उसके तन को।''[40]

इन पंक्तियों में गांधारी का अपने पुत्रों के प्रति मोह एवं पाण्डवों के प्रति घृणा प्रत्यक्ष रूप में देखने को मिलती है। श्री कृष्ण गांधारी का माता के समान सदैव आदर करता था परन्तु गांधारी अपने पुत्रों के स्वार्थ में अंधी होकर दुर्योधन का कंकाल देखकर कृष्ण को शाप देती है।

'कर्ण', नाट्य काव्य में भी भगवतीचरण वर्मा द्वारा पारिवारिक ह्रास एवं सामाजिक संबंधों पर चिंता व्यक्त की गई है। कर्ण सूर्य का पुत्र होते हुए भी समाज में सूत पुत्र के नाम से जाना जाता है तथा समाज में उसे सदैव घृणित दृष्टि से देखा जाता है। द्रौपदी के स्वयंवर में भी कर्ण को सूत पुत्र कहकर अपमानित किया जाता है। कौरव और पांडवों के युद्ध के दौरान कुंती इस रहस्य का उद्‌घाटन करती है कि कर्ण कुमारी कुंती एवं सूर्य का पुत्र है। हमारे समाज में कुमारी लड़की का पुत्र जनन बहुत बड़ा लांछन होता है। कर्ण कुंती को ऋषि के वरदान के स्वरूप उत्पन्न हुआ था जिसे कुंती ने लोकलाज के भय से त्याग दिया। माता द्वारा त्याज्य होने के कारण कर्ण कुलीन होते हुए भी अकुलीन कहलाया। महान होते हुए भी उसकी गणना महारथियों में नहीं की जाती। युद्ध के समय अपने पुत्रों के प्राणों का दान माँगने आई कुंती उसे बताती है :–

''एक बार जब मै। कुमारिका थी, तभी
सहसा ही आसक्ति सूर्य के पति जागी
जिन्हें मंत्र बल से था, आमन्त्रित किया
सुनो कर्ण। तुम उन्हीं सूर्य के पुत्र हो
लोकलाज से फिर तुमको तजना पड़ा

[40] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 92

लज्जित हूं मैं कर्ण तुम्हारे सामने।''[41]

आज समाज का ढांचा इसलिए खोखला होता जा रहा है क्योंकि वह स्वर्थपूर्ण संबंधों से बना हुआ है। आज स्वार्थवश अंधा होकर व्यक्ति अपने ही परिजनों को नुक्सान पहुँचा रहा है। इन्हीं सामाजिक संबंधों के ह्रास का वर्णन कवियों ने स्वतन्त्र्योत्तर नाट्य काव्रूों में किया है कि किस प्रकार समाज में एक दूसरे से संबंध स्वार्थ के कारण बनते हैं। अंधायुग में इन्हीं स्वार्थपूर्ण संबंधों के कारण हुए महाभारत के युद्ध का चित्रण हुआ है। दुर्योधन सत्ता के मद में चूर अपने निजी स्वार्थ के कारण युद्ध की घोषणा करता है। पुत्रों के मोह में अंधे धृतराष्ट्र के स्वार्थ का दुष्परिणाम सभी को भुगतना पड़ता है।

समाज में आज स्वार्थ इतना फैल गया है कि हमारे खून के रिश्तें भी स्वार्थों पर आधारित हो गए हैं। आज सत्ता की भूख इतनी बढ़ गई है कि लोभ, ईर्ष्या, क्रोध, घृणा जैसे अमानवीय गुणों का मनुष्य में वास हो रहा है। पैसे के लिए भाई–भाई को मार रहा है। चिड़िया की आंख में भी पाण्डवों को मारने के लिए लाक्षागृह बनाया जाता है ताकि पाण्डवों को मारकर राज्य हासिल कर सकें। यह घटना वर्तमान सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों को प्रकट करने में पुर्णतः सफल होती है। धन एवं सत्ता का स्वार्थ मनुष्य को अंधा बना देता है। वह मनुष्य में इंसानियत के गुण समाप्त कर देता है। जिससे मनुष्य अपने पारिवारिक संबंधों को तार–तार कर देता है। चिड़िया की आंख में कवि ने राज्य पाने की इच्छा से भाइ–भाई के संबंधों में होने वाली कड़वाहट को इस प्रकार परिलक्षित किया है कि किस प्रकार सामाजिक मनुष्य सत्ता के लालच में अंधा होकर कुछ भी नहीं देख पाता–

''इसी भूख में जलते हैं कौरव
जिन्होंने पाण्डवों को, जीवित जलाने को
लाक्षाग्रह का निर्माण किया था
इसी भूख ने छीन लिया पांडवों का विवेक
जिन्होंने हाड मास की द्रौपदी को
ऐसे बांट लिया
जैसे भूखे को रोटी बांटते हैं।''[42]

वर्तमान समय में भी परिस्थितयां ऐसी ही बनी हुई हैं। आज भी भाई–भाई की पैसे के लिए जान ले रहा है। पैसे एवं सत्ता के लिए अपनों की हत्याएं मीडिया के माध्यम से प्रतिदिन देखने को मिलती हैं। इनका मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि के कारण फैली बेरोजगारी, विपन्नता, भूख, गरीबी, लोभ, लालच है। सत्ता के लालच में व्यक्ति अपने परिवार से ही कट जाता है। इसी कारण उसमें संस्कारों, नैतिक मूल्यों की कमी होती जा रही है। मनुष्य अपनी समझ खोता

[41] डॉ॰ भगवती चरण वर्मा, कर्ण, पृ॰ 153
[42] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 73

जा रहा है। वह पारिवारिक रिश्तों की समझ गंवा चुका है। यही कारण है कि द्रौपदी के स्वभिमान एवं उसकी भावनाओं की चिंता किये बिना पांडव सत्ता के मोह में अंधे होकर उसे पांचों भाइयों में वस्तु की भांति बाँट लेते हैं।

समाज में समय परिवर्तन के साथ–साथ नवीनता अवश्य आती है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में कवियों ने समाज में संबंधों के ह्रास को प्रस्तुत किया। परन्तु वर्तमान समय में भी पारिवारिक विघटनता एवं सामाजिक संबंधों का ह्रास पहले से ज्यादा होने लगा है। प्रतिदिन टूटते परिवार हमारे समाज का कटु सत्य बन गए हैं। आज रिश्ते भी स्वार्थों पर ही टिके हुए हैं। स्वार्थ पूरा हो जाने पर व्यक्ति अपनों से ही संबंध तोड़ देता है। वह धन की लोलुपता में इतना अंधा हो गया है कि उसे अपने बनाये हुए रिश्ते ही नजर नहीं आते। सत्ता एवं धन का मोह इंसान से इंसानियत के रिश्ते को ही समाप्त कर देता है। इसी कारण पाण्डवों द्वारा अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए निषाद माँ को उसके बच्चों समेत जिंदा जला दिया । वहीं पांडवों में द्रोपदी को लेकर संघर्ष छिड गया। पहले पाण्डवों द्वारा द्रौपदी को पांचों पांडवों की पत्नी बनाया गया तथा बाद में इन्द्रप्रस्थ का राज्य पाने के लिए उसे कोरवों के सामने हार गए। चिड़िया की आँख में द्रौपदी को नहीं समाज में तार–तार होती स्त्री की अस्मिता को दर्शाया गया है–

''द्रौपदी की लालसा में
कौरवों ने
पांडवों को दे दिया इन्द्रप्रस्थ का राज्य''[43]

राज्य के लोभ में अपनी पत्नी को दाँव पर लगाना किसी सामाजिकता का परिचायक नहीं अपितु समाज में पारिवारिक रिश्तों के दिन प्रतिदिन टूटते रिश्तों का प्रत्यक्ष उदारहण है।

'एक कंठ विषपायी' में कवि 'दुष्यन्त कुमार' ने भी समाज में अपनी मर्यादा एवं प्रतिष्ठा के लिए अपने पारिवारिक संबंधों के ह्रास को रूपायित किया है। आधुनिक समय भौतिकवाद से पूर्णतः प्रभावित है। भौतिकता से समाज का कोई अंग अछूता नहीं रहा है। परिणाम स्वरूप बिखराव और आडम्बर की प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं तथा मानव संवेदनशून्य होता जा रहा है। उसके रिश्तों में खोखलापन एवं औपचारिकता आ गई है। इस कारण रिश्तों का भी व्यवसायीकरण हो गया है। पति–पत्नी, भाई–भाई, मां–बेटे, भाई–बहन, मित्रता सभी रिश्तों का पतन होता जा रहा है। रिश्ते केवल स्वार्थ पर आधारित हो गए हैं। दक्ष द्वारा भी अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को बचाने के लिए अपनी पुत्री सती से इस लिए रिश्ता समाप्त कर दिया जाता है क्योंकि वह प्रेम विवाह कर लेती है। इसी कारण दक्ष शिव से प्रतिशोध लेना चाहता है तथा सती एवं शिव दोनो को समाज से बहिष्कृत करने का प्रयत्न करता है। वह कहता है कि मेरी सामाजिक प्रतिष्ठा की

[43] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 74

हत्या कर सती ने अपने दुर्भाग्य को न्यौता दिया है। पिता होते हुए भी दक्ष समाज में अपनी नाक ऊँची रखने के लिए सती एवं शिव को दण्ड स्वरूप समाज से बहिष्कृत करने का षडयंत्र रचता है –

''शंकर के मोह में सती ने
अपने अथवा अपने पति के
दुर्भाग्यों को उकसाया है
तुमकों बतलाये देता हूं–
सारे भद्रलोक से इसे
बहिष्कृत करके छोड़ूंगा''[44]

निष्कर्षतः स्वतन्त्र्योतर नाट्य काव्यों के माध्यम से वर्तमान संदर्भ में खोखले रिश्तों एवं टूटते परिवारों को चित्रित किया गया है। रिश्तों में आए ह्रास को कवियों ने यथार्थ समय बोध के रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की है। वर्तमान समय में पारिवारिक एवं सामाजिक संबंध केवल स्वार्थ पर आधारित रह गए है। स्वार्थ के कारण ही संबंधों में खोखलापन आ गया जिस कारण समाज में दिन प्रतिदिन परिवार टूट रहे हैं।

4.7 सामाजिक रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं का तिरस्कार :

हमारा समाज 21वीं सदी में पनपने के बाद भी रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं से जकड़ा हुआ है। प्राचीन समय से चली आ रही वर्ण–व्यवस्था जातिप्रथा, अनमेल विवाह, धर्माधता आदि कुरीतियों एवं रूढ़ियों से समाज अब तक छुटकारा नहीं पा सकता है। समय परिवर्तन के साथ समाज सुधारकों के अथक प्रयासों के बाद भी धीरे–धीरे इन मान्यताओं में परिवर्तन अवश्य हुआ परन्तु ये पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हो पाई। इनकी जड़े समाज में बहुत गहराई तक फैली है। साहित्यकार अधिक संवेदनशील प्राणी होने के कारण समाज को गहनता से देखता है। जिससे समाज का कोई भी पक्ष रचनाकार से अछूता नहीं रह पाता। साहित्यकार के मन में मानव के प्रति गहन संवेदना होती है। इसलिए वह उन नियमों को कभी स्वीाकर नहीं कर पाता। जिनसे मानवता का ह्रास हो। रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं से भी मानवता का ह्रास होता है इसलिए ह्रास वह रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं का विरोध करता है। आधुनिक समय में भी कहीं कहीं इन रूढ़ियों का प्रभाव परिलक्षित होता है।

रचनाकार अपने समकालीन परिवेश की परिस्थितियों घटनाओं, रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं से प्रभवित होकर ही उन पर गहन चिंतन करता हुआ। उन्हें अपनी रचना के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। स्वतन्त्र्योत्तर, नाट्य–काव्यों में भी कवियों ने जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था कि

---

[44] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 32

कि अनमेल विवाह जैसी अनेक कुप्रथाओं को प्रत्यक्ष किया है जो हमारे समाज की उन्नति में घातक सिद्ध होती है।

4.7.1 अनमेल विवाह –

रचनाकार द्वारा रचित रचना का उद्देश्य उसी रचना में निहित रहता है। अपने समय की समस्याओं एवं परिस्थितियों का चित्रण रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से करता है। भगवतीचरण वर्मा ने भी अपने नाट्य काव्य तारा में निहित अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर किया है। ''यौवन तारा एवं उसके बूढ़े पति ऋषि बृहस्पति के माध्यम से अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है। तारा उद्दाम यौवन और मादकता से परिपूर्ण युवती है। उसका विवाह बूढ़े ऋषि बृहस्पति के साथ कर दिया जाता है। जिससे उसे तृप्ति नहीं मिलती जिस कारण उसका अतृप्त मन विद्रोह कर उठता है। वह मन को संयत करने का प्रयत्न करती है। परन्तु रस की चाह करने वाली मुग्धा को मुक्ति कहां मिलती है। अनमेल विवाह के कारण पति–पत्नी के विचारों में मतभेद स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। बृहस्पति वैराग्य धारण कर ब्राह्मचार्य का पालन करता है जबकि तारा में प्रेम भी वासना की लहर हिलोरे लेती है। इसलिए वह अपने पति से कहती है कि –

''मुझे चाह है रस की पावन प्रेम की
उस विस्मृति की, उस अनन्त संगीत की
जिसमें निज ममत्व को भूलकर
हो जांऊ मैं मग्न।''[45]

उम्र के अत्यधिक अन्तराल के कारण बृहस्पति अपनी तारा को संयमित रहनेका उपदेश देते हैं। वे भोग–विलास, ऐश्वर्य, सुख–वैभव को जीवन के पतन का कारण मानते हैं। इसी कारण तारा के मन में प्रेम को लेकर संघर्ष छिड़ जाता है। अनमेल विवाह के कारण वर्तमान समय में भी विचारों में सामजंस्य न होने के कारण आपसी रिश्तों में दरार देखी जा सकती है। तारा एवं बृहस्पति का मध्य आयु की अन्तर अधिक होने के कारण। उनके आपसी विचार नहीं मिल पाते। उनके विचारों में अलगाव के कारण उनका रिश्ता गुरू एवं शिष्या का रूप धारण कर लेता है। तारा के लिए उसके पति प्रेमी नहीं अपितु श्रद्धेय जान पड़ते हैं –

'वे मेरे पति? नहीं भूल है। भूल है।
वे है गुरू, गुरूजन पूजा के पात्र है
प्रेम नहीं उन पर तो मेरी भक्ति है।''[46]

---

[45] डॉ॰ भगवती चरण वर्मा, सम्पूर्णनाटक, तारा, पृ॰ 127
[46] डॉ॰ भगवती चरण वर्मा, सम्पूर्ण नाटक, तारा, पृ॰ 127

बृहस्पति वासना को तिरस्कारणीय मानते हैं वहीं तारा चंचल मन की मनोवृत्ति के कारण अपने भावों के वेग को रोक नहीं पाती। अनमेल विवाह के कारण पति–पत्नी के संबंध अच्छे नहीं है। परिणामतः उनके बीच अलगाव बढ़ जाता है। बढ़ते अलगाव के कारण ही तारा का पर पुरूष की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक प्रतीत होताहै। अनमेल विवाह में आयु का अत्यधिक अन्तर होने के कारण पत्नी की सभी इच्छाओं को दबा दिया जाता है। जिस कारण वह उपयुक्त पृष्ठभूमि पाते ही अपनी इच्छा पूर्ति के लिए आदर्शों, बंधनों को तोड़कर उचित अनुचित के बीच द्वन्द्व में फंस जाती है। और अत्याधिक मानसिक संघर्ष के बाद वह अपनी उपयुक्त परिस्थितियाँ पाते ही निर्बल हो जाती है और अपना सर्वस्व चंद्रमा को सौंप देती है जो उसके पति गुरू बृहस्पतिका शिष्य है। अनमेल विवाह के कारण ऐसे अनुचित कार्यों को बढ़ावा मिलना स्वाभाविक है जो समाज में अनैतिकता फैलाते है तथा समाज के नियमों को तोड़ते हैं। चन्द्रमा एवं तारा द्वारा किये गए कार्य को समाज में अपराध माना जाता है और जो भी समाज के नियमों को ताक पर रखता है वह दण्ड का अधिकारी होता है –

''तुमने तोड़ा है समाज के नियम को,
तो फिर आओ चलो दण्ड भी तुम सहो।''[47]

बाल विवाह एवं अनमेल विवाह के दुष्परिणाम समाज को ही भुगतने पड़ते हैं। इससे समाज में अव्यवस्था फैलती है।

'जानकी वल्लभ शास्त्री' कृत 'पाषाणी' में भी यही समस्या उठाई गई है इसमें तारा के स्थान पर अहल्या के मन की त्रासदी को व्यक्त किया गया है। बालकपन में ही उसका ब्याह बूढ़े ऋषि गौतम के साथ हो जाता है। इन्द्र के साथ प्रणय उसकी अतृप्त यौवन कुंठा का प्रतीक है। तप उसके जीवन में बाधक बन जाता है। उसका जीवन कमल आँसुओं के जल में डूब जाता है। संयम को अहल्या शब्द–जाल मात्र समझती है वह गौतम से कहती है –

''बस तप की मत बात करें, तपतें तपते मन ऊबा है,
मेरे जीवन का फूल कमल, आँसु के सर में डूबा है।''[48]

अहल्या भी तारा की भाँति अतृप्त यौवन की प्यास है। ऋषि गौतम उनके आवेग को कम करने के लिए याज्ञवल्कि की पत्नी कात्यायनी और मैत्रेयी की कहानी सुनाते हैं। किन्तु अहल्या सो जाती है। अपनी कामुकता के कारण वह इन्द्र से प्रणय संबंध बना लेती है। तब ऋषि को अपने कार्य का पश्चाताप होता है। महर्षि गौतम संयमी और ज्ञानी है। किन्तु वे स्त्री के हृदय और भावनाओं के पारखी नहीं, कामुकतावश वे वृद्धावस्था में अहल्या से विवाह करते है। अन्त में उन्हें अपने कार्य पर पश्यातात होता है।

''मेरा नाम तुम पुकार–पुकार करो गौतम है तुम्हें धिक्कार ।

---

[47] वही, पृ॰ 136
[48] डॉ॰ जानकी वल्लभ शास्त्री, पाषाणी, पृ॰ 67

आत्मवंचना मैने की है, दण्डनीय मैं आप ही
पुण्य से जो न तुम्हें पा सका, मेरा जीवन पाप ही।''[49]

'तारा' में जहां ऋषि बृहस्पति द्वारा तारा एवं चन्द्रमा को शाप दिया जाता है वही पाषाणी में अहल्या के मन की बात समझकर ऋषि स्वतः ही अपने को दोषी समझने लगता है।

निष्कर्षतः बाल विवाह एवं अनमेल विवाह की समस्या समाज में गहनता से व्याप्त है समय के साथ–साथ अब इसके विरूद्ध कानून भी बना दिए गए हैं। परन्तु फिर भी वर्तमान समय में यह समस्या कुछ कम अवश्य हुई है। परन्तु समाप्त नहीं हुई। अनमेल विवाह के कारण समाज में अनैतिकता, अन्याय जैसी बुराइयों ने जन्म लिया है। इस प्रकार अनमेल विवाह समाज की कुप्रथा है जो समाज के हित के लिए कष्टकारी है।

4.7.2 वर्ण व्यवस्था एवं जातिगत भेदभाव –

वर्ण व्यवस्था की परम्परा हमारे समाज के लिए अभिशाप बन चुकी है। जो हमारे समाज को दीमक की भाँति अन्दर ही अन्दर खोखला करती जा रही है। इससे समाज में साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला है और अव्यवस्था फैलती है। स्वातन्त्र्योत्तर कवि भी वर्ण व्यवस्था को अनदेखा नहीं कर पाये। वर्णव्यवस्था की जड़ें समाज में इतनी गहरी हैं कि उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। वर्ण व्यवस्था का गरल अछूतों को समाज में सदैव पीना पड़ता है। उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में समाज द्वारा अपमानित किया जाता है। भगवतीचरण वर्मा कृत नाट्य काव्य 'कर्ण' में कर्ण को समाज में सदैव इसलिए अपमानित होना पड़ता है क्योंकि वह वर्णहीन है। इसी कारण स्वयंवर में उसे द्रौपदी द्वारा अपमानित होना पड़ता है। वह सूत पुत्र होने के कारण वर्णहीन था। भरी सभा में जब वह लक्ष्य साधने के लिए आगे बढ़ता है उसे सूत पुत्र कह कर रोक दिया जाता है। वर्णहीन होने का गरल उसे समाज में बार–बार पीना पड़ता है। द्रौपदी द्वारा भरी सभा में अपमानित होने पर कर्ण की भावनाओं को ठेस पहुंचती है। वर्ण व्यवस्था के गरल का पान उसे अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में करना पड़ता है। सूत पुत्र होने के कारण महारथी होते हुए भी उसकी गणना महारथियों में नहीं की जाती। महाभारत के समय में सूत वर्णहीन समझे जाते थे। सूत को समाज में कोई सम्मान नहीं दिया जाता था। उनके साथ शुद्रों का सा व्यवहार किया जाता था। इसलिए कर्ण समाज में तिरस्कृत एवं लांछित था। महान धनुर्धर होते हुए भी द्रौपदी स्वयंवर में उसका अपमान किया गया जो दृष्टव्य है –

''कर्ण। रूको तुम सूत पुत्र क्या कर्ण हो?
मुझको वरने का अधिकार तुम्हें नहीं
राज सुता मैं कृष्णा हूँ यह जान लो,

---

[49] वही, पृ॰ 99

वर्णहीन तुम केवल दर्शक भर रहो।''[50]

महान योद्धा होते हुए भी कर्ण का यह अपमान इसलिए होता है क्योंकि वह वर्णहीन था। भगवतीचरण वर्मा की भाँति कविवर सुभाषपंत ने भी चिड़िया की आंख में वर्ण–व्यवस्था को एक शाप के रूप में चित्रित किया है। जातिगत भेदभाव के कारण अछूत महान योद्धा होते हुए भी उनको समाज में उचित दर्जा प्राप्त नहीं होता। माधवी कहती है कि अर्जुन की भाँति कर्ण भी मछली की आँख भेद सकता था परन्तु वर्ण व्यवस्था के कारण उसे भरी सभा में अपमानित होना पड़ा। इसलिए माधवी कहती है :–

''हाँ बेध सकता था कर्ण भी
पर सूत–पुत्र कहकर
भरी सभा में उसकी अवमानना
और जाति के आधार पर
रद्द कर दी उसकी पात्रता।''[51]

माधवी कहती है कि कर्ण की भाँति एकलव्य को भी वर्ण व्यवस्था का यह जहर पीना पड़ा था। वह भी कर्ण की भाँति अर्जुन से भी अधिक महान धुनर्धर था। परन्तु अछूत होने के कारण उसे समाज में उचित सम्मान नहीं मिला । इसलिए माधवी कहती है कि एकलव्य के साथ भी कर्ण जैसा ही व्यवहार हुआ –

''मछली की आँख तो
बेध सकता था एकलव्य भी
लेकिन उसकी धमनियों में
अछूत खून बहता है।''[52]

योग्य होने का अधिकार केवल उच्च कुल वालों को ही होता है। अछूत योग्य होते हुए भी अपमान ही पोते हैं। वर्ण–व्यवस्था का गरल उन्हें प्रतिक्षण पीना पड़ता है। अपने साथ होने वाले अन्य को वे देख रहे हैं । समझ रहे हैं परन्तु विरोध नहीं कर पा रहे। दोण के पास आया एकलव्य भी इसी कारण निराश होकर लौट आया कि द्रोण अछूतों को शिक्षा नहीं देता। द्रोण के वचन स्वयं जातिवाद एवं वर्णव्यवस्था को प्रकट करते हैं। ''मैं अछूतों को शिक्षा नहीं देता। मैनें उसे जाति के आधार पर ठुकरा दिया है। उसके लिए सब द्वार बन्द थे। क्योंकि मैं सोचता था कि मुझसे बड़ा धनुर्वेद का ज्ञाता और तुमसे बड़ा धनुर्धर कोई नहीं हो सकता।[53] उच्च वर्ग सदैव निम्न वर्ग को दबाता आया है। जातिगत भेदभाव के कारण उन्हें समाज में आगे

---

[50] डॉ॰ भगवती चरण वर्मा, सम्पूर्ण नाटक, कर्ण, पृ॰ 149
[51] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 66
[52] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 67
[53] वही, पृ॰ 80

बढ़ने के अवसर प्राप्त नहीं होते। शोषण के विरूद्ध यदि वे आवाज उठाते हैं तो उन्हें दबा दिया जाता है। द्रोण के अर्जुन को यह कहने पर कि एकलव्य बहुत बड़ा धनुर्धर है और अछूतों को धनुर्विद्या दे रहा है। अर्जुन बिना एकलव्य की शक्ति एवं सामर्थ्य जाने कहता है कि कर न देने को लेकर अछूतों ने पहले भी विद्रोह किया था। जिसे हमने कुचल दिया। ''अछूतों की ओर से पहले भी विद्रोह हुआ था तब उनके गाँव जला दिये गये थे। विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया गया था। हत्याएं हुई, बलात्कार हुए उनका मनोबल पूरी तरह तोड़ दिया गया था।''[54] अब वह सिर उठाने का दुस्साहस नहीं करेंगे। दलितों की तरफ से जब भी शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई गई तभी उन्हें कुचल दिया गया।

शम्बूक नाट्य–काव्य में भी वर्णव्यवस्था के कारण समाज में फैली अमानवीयता को दर्शाया गया है। राम द्वारा शम्बूक की हत्या इसलिए की जाती है क्योंकि वह अछूत होकर तप करता है। नारद के यह कहने पर कि विप्र का बेटा इसलिए मरा क्योंकि जंगल में एक अछूत तपकर रहा है। राम द्वारा यदि उसकी हत्या की जाए तो विप्र का बच्चा जीवित हो सकता है। मनुष्यगत असमानता के यथार्थ को जाति–व्यवस्था का आधार लेकर कवि ने इस प्रकार व्याख्यापित किया है–

''तप नहीं है शूद्र का कर्तव्य
फिर से सोच लो शम्बूक।
उसे सेवा कर्म ही भव्य
क्यों उसमें करे वह चूक।''[55]

वर्णव्यवस्था ने पूरे समाज को विषाक्त कर दिया है। वर्णव्यवस्था का जहर समाज की नस–नस में फैल चुका है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में इसी असमानता एवं अव्यवस्था को दर्शाया गया है। शम्बूक कर्ण, एकलव्य, सर्वहत के माध्यम से कवि ने वर्ण व्यवस्था के भयंकर शाप को दर्शाया है जो समाज में असमानता का बहुत बड़ा कारण है तथा समाज की उन्नति में बाधक है।

4.7.3 अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी सोच :

अंधविश्वास भी हमारे समाज को अंधकार के गहरे गड्डे में धकेल रहा है। अंधविश्वास के कारण समाज उन्नति की जगह अवनति की ओर अग्रसर हो रहा है। अंधविश्वास के कारण पिछड़ा वर्ग और अधिक पिछड़ रहा है। निम्न जातियों में शिक्षा के अभाव के कारण अंधविश्वास की प्रखरता पाई जाती है। इसी कारण शम्बूक नाट्यकाव्य में जब ब्राह्मण के बच्चे को साँप डस लेता है। नारद इन्द्र के राज्य की रक्षा हेतु यह अफवाह फैलाता है कि जंगल में एक शुद्र तप

[54] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 84
[55] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 50

कर रहा । इसी कारण राम राज्य में पिता से पहले पुत्र की मृत्यु हुई । कवि ने नारद के शब्दों के माध्यम से समाज में फैले अंधविश्वास को प्रत्यक्ष किया है –

''विपिन जाकर, शुद्र मुनि वध
जब करेंगे राम विप्र सुत होगा
तभी जीवित, सहज परिणाम।''[56]

नारद द्वारा ग्रामीणों में फैलाये गये अंधविश्वास के कारण राम शम्बूक की हत्या करने के लिए तैयार हो जाता है। धर्मवीर भारती कृत अंधायुग में भी ज्योतिष द्वारा यह कहना कि कौरव ही युद्ध में जीतेंगे। अंधविश्वास को पैदा करता है। इसी अंधविश्वास के कारण ज्योतिष की बात सत्य मानकर कौरव युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं तथा बाद में हार जाते हैं। इसी प्रकार चिड़िया की आंख में भी घाटी के लोगों के अंधविश्वासें का शासकों द्वारा लाभ उठाया जाता है।

अतः अंधविश्वास के कारण ही आदिवासी एवं जनजातियाँ समाज का हिस्सा नहीं बन पाती। शिक्षा के प्रचार प्रसार से अंधिवश्वासों में लोग कम विश्वास करने लगे हैं। परन्तु ग्रामीण एवं अशिक्षित तबगा अब भी अंधविश्वास एवं रूढ़ियों में जकड़ा हुआ है। जो वर्तमान समाज के लिए घातक है। जिससे समाज का अपकर्ष हो रहा है।

4.8 स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में स्त्री प्रश्न –

स्त्री–विमर्श आज बहुचर्चित विषय बना हुआ है। हर कहीं स्त्री अधिकारों की स्त्री के आरक्षण, संवर्धन, पोषण की बात हो रही है। इन सब के बावजूद भी स्त्री स्थिति में सुधार के परिणाम संतोषजनक नहीं है। समाज में सजग, सचेष्ट और सफल होने के लिए उसे इतना स्पेस नहीं मिल पाता कि वह अपनी अस्मिता मात्र बचा सके। पूर्ववर्ती समय में नारी को देवी का दर्जा अवश्यक दिया जाता था। परन्तु उसके बोध को विकसित नहीं होने दिया जाता था। यदि हम बहुत पुराने समय की बात करें तो स्त्री को विद्या ग्रहण करने एवं शास्त्रार्थ करने का अधिकार था। पर धीरे–धीरे उसे शिक्षा से वंचित रखा जाने लगा। जिस कारण वह अस्मिता, शक्ति, महता से बेखबर भाग्य की रेख पर चलकर जीवन यापन करती थी। परन्तु जब उसे शिक्षा प्रदान की गई तो ऐसी स्थिति में वह दोहरा संज्ञान झेल रही है। आज उसके सामने विकल्पों की राह तो चारों ओर खुली हुई है। परन्तु पैरों में परिवार एवं समाज ने ऐसी बेड़िया डाल रखी है। जिन्हें खोलने पर स्त्री अर्मादित एवं त्याज्य हो जाती है। भरत भूषण अग्रवाल द्वारा रचित नाट्य काव्य अग्निलीक जीवन की इसी विडम्बना को प्रस्तुत करता है। कि

[56] डॉ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 12

टूटी हुई मर्यादा के लिए पुरूष या स्त्री में कौन जिम्मेवार है। मर्यादा पुरूष द्वारा तोड़ी जाती है या स्त्री द्वारा।

भारतीय संस्कृति, समाज एवं साहित्य ने सदैव स्त्री को महिमा मंडित किया है जीवन के मानवीय मूल्यों का आधार स्त्रोत नारी को ही बनाया जाता रहा है और वह हँसते हँसते कुर्बान होती रही। नारी को अबला कहकर उसे कमजोर बना दिया गया। उसकी कुर्बानी को उसकी महिमा बताकर उसे समाज में सम्मान दिया गया। राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रयासों के बावजूद ही नारी के अबला होने के मिथ को तोड़ा जा सकता है। पुरूष प्रधान समाज, धर्म, संस्कृति, साहित्य की आड़ में नारी शोषण के नए मानदण्ड निर्धारित करता रहा है। धर्म मर्यादा की दुहाई देकर समाज में स्त्री के विकास को रोका गया। आज नारी के समक्ष अपनी सार्थकता, अस्मिता एवं सत्ता को सिद्ध करना एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। यह चुनौती उसके सामने तब आई जब वह अपनी सचेतनता को महसूस करने लगी। आज वह अपने स्वत्व, सत्ता, स्वाभिमान, स्वतन्त्रता को जानने पहचानने एवं समझने लगी है। इसलिए आत्म संघर्ष कर वह परिस्थिति एवं योग्य से लड़ रही है। इसीलिए अग्निलोक में सीता एक क्रांति की उद्घोषक बन जाती है–

''मुझे निमर्म सत्य दिखाई देने लग गया है
राम ने तो मुझे पहले ही छोड़ दिया था
आज मैं भी राम को छोड़ती हूँ
अब मैं स्वतंत्र हूँ मुक्त हूँ।''[57]

सीता की उद्घोषणा आधुनिक नारी की उद्घोषणा है। आज की नारी अपनी निर्देशिका, अपनी कत्री और अपनी भोगता स्वयं है। नव जागरण काल में जब मानव अपने परिवेश परिदृश्य एवं परिस्थितियों को जानने एवं समझने लगा तब नारी के अन्दर भी अपने व्यक्ति स्वातन्त्र्य सत्ता एवं अस्मिता का एहसास जागने लगा। उस के मन में अस्मिता के प्रश्न उठने लगे। नवजागरण आंदोलनों में उठे इन प्रश्नों ने परम्परागत मिथों, अँधी आस्थाओं एवं रूढ़ियों की जड़ें हिला दी, मानव मुक्ति के नए स्वप्न संजोए गए। आधुनिक दर्शन ने मानव मुक्ति की धारणा को पलटकर रख दिया। अब वह दूसरों के संकेतों पर चलने वाली कठपुतली नहीं स्वयं की राह बनाने वाली निर्देशिका है –

''आज तक सब मुझे चलाते रहे
और मैं सबके संकेतों पर चलती रही
अपने प्यार का दीपक जलायें।
अब मैंने वह चादर उतार फैंकी है

---

[57] डॉ॰ भारत भूषण अग्रवाल, अग्निलीक, पृ॰ 53

और वह दीपक फूँक मारकर बुझा दिया है।''[58]

अग्निलीक में सीता के माध्यम से नारी के संत्रास, शोषण, पीड़न के मिथ को तोड़ने का प्रयास किया गया है। मूल ऐतिहासिक पौराणिक घटना–राम द्वारा सीता का निवास, अश्वमेज्ञ यज्ञ का आयोजन, सीता द्वारा समाधि लेना आदि प्रसंगों को समकालीन समय बोध से अनुप्राणित करके आधुनिक जीवन संदर्भों से जोड़ नारी को एक नई ऊर्जा, आत्मविश्वास आत्मज्ञान की रोशनी प्रदान की गई है। गहरी मानवीय संलग्नता से ओत–पोत सीता व्यक्ति, समाज धर्म, संस्कृति, दर्शन की गहरी पड़ताल करती है –

''शोभा शोभा?
हाँ, नारी तो शोभा ही है ?
उससे तो शोभा ही माँगी जाती है गुरूदेव
क्या इस राम साम्राज्य में सत्य के लिए कोई स्थान नहीं।''[59]

आधुनिक नारी अपनी सार्थकता और महता पाने के लिए छटपटा रही है। वह नारी शोषण एवं दासता के छदम को पहचानने लगी है। वह जानती है कि अपनी अस्मिता को तार–तार होने से बचाने के लिए वर्षों के यथा स्थितिवादी सामाजिक ढांचे को ध्वस्त करना होगा। समाज एवं जीवन को आगे बढ़ाने के लिए नए सरोकार तलाशने होंगे। अपने साथ होने वाले अत्याचार अनाचार को भस्मीभूत कर सकने की क्षमता पैदा करनी होगी। परम्परागत व्यवस्था की जड़ता को समाप्त कर अपनी संवेदनशीलता को जगाकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण स्वयं करना होगा। अब तक दूसरों के दिये आश्वसानों पर, दूसरों द्वारा बनाये गये मार्गों पर चलती रही। अब वह निर्वेग गति से बहती हुई अपना मार्ग स्वयं बनायेगी –

''आज पहली बार चेत हुआ है
हाय मैं इतनी अंधी क्यों हो गयी?
मैनें क्यों मान लिया
कि जो पहले तिरस्कार कर चुका है
धोखा दे चुका है
वह अब एकाएक सच्चा हो जाएगा।''[60]

अग्निलोक में सीता मौन मूक शहादत देने वाली नारी नहीं है अपितु अपनी नियति के बदले संकल्प से बंधी जीवित जागृत, सचेत नारी बनकर आती है।

स्त्री अब पूरे, सम्मान से समाज में सिर उठाकर जीना चाहती है। वह पुरूषों के अत्याचार को अब नहीं सहना चाहती। अग्निलोक की सीता की भाँति सुभाष पंत कृत चिड़िया

---

[58] डॉ॰ भारत भूषण अग्रवाल, अग्निलीक, पृ॰ 53
[59] वही, पृ॰ 39
[60] डॉ॰ भारत भूषण अग्रवाल, अग्निलीक, पृ॰ 39

की आँख की द्रौपदी भी वाद–विवाद करती है। वह पाँचों पांडवों की पत्नी बनने का विरोध करती है। वह केवल अर्जुन की पत्नी बनकर ही समाज में सम्माननीय जीवन जीना चाहती है। इसीलिए वह संस्कार एवं आदर्शों को भूलकर अपने साथ हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने वाली नारी परिलक्षित होती है। वह कुंती से तर्क करती है–

''मैं नहीं हूं माटी का लौंधा
मुझमें भी है नारी का सम्मान
और सम्वेदनशीलता।
संसार को कैसे दिखा सकूँगी
मैं अपना मुँह
हर रात बलात्कार झेलते हुए।''[61]

स्त्री की सबसे बड़ी शत्रु है यह 'चिड़िया की आँख' में चरितार्थ होता है जहाँ एक तरफ द्रौपदी नारी मुक्ति के लिए संघर्ष करती है वहीं कुंती सत्ता के मोह में अंधी होकर नारी के शोषण की पक्षधर बन जाती है। वह द्रौपदी के साथ हो रहे अन्याय को रोकने की अपेक्षा द्रौपदी को सत्ता का लोभ देते हुए कहती है। पाण्डवों से विवाह करने के पश्चात तू राजसत्ता की एकमात्र स्वामिनी होगी। परन्तु द्रौपदी आधुनिक नारी के समान है अपना सम्मान पाने के लिए वह राजसत्ता को ठुकरा देती है। वह तर्क देती है मुझे तो रानी नहीं मुझे केवल पत्नी बनना है एक सम्पूर्ण नारी की तरह इतिहास कलंकित नारी बनकर मिला ऐश्वर्य मुझे स्वीकार नहीं है। कुंती तर्क देती है हम वनों में भटकने के लिए पैदा नहीं हुए है। सत्ता पाना हमारा अधिकार है। हम न्याय अन्याय की सीमाओं से बाहर बाहर केवल लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं। सत्ता के लिए संघर्ष करने वाले व्यक्ति विवेक शून्य हो जाता है। द्रोपदी को सत्ता मोह नहीं है। वह नारी सम्मान के लिए आवाज उठाती है–

''मैं घृणा करती हूँ
ऐसी अंधी सत्ता से
जिसे साधने में
नारी बाँटी जाती टुकड़े–टुकड़े में।''[62]

द्रौपदी अपने नारीत्व को संजोना चाहती है। वह स्वयं को वस्तु की भाँति नहीं बँटने देना चाहती। वह आधुनिक स्त्री की तरह सिर उठाकर जीना चाहती है। इसके विपरीत कुंती में सत्ता की भूख है। वह सत्ता के लिए स्त्री जाति को ही कलंकित करना चाहती है। वह कहती है कि समाज में जो तुझे कलंकित करना चाहती है। वह कहती है कि समाज में जो तुझे

---

[61] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 70
[62] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 71

कलंकित करने का साहस करेगा मेरे पुत्र उसे मार देंगे। परन्तु तुम्हें अपने अन्दर की नारी को मारना होगा।

कुंती स्त्री होकर भी द्रौपदी के दुख को नहीं समझ पाती। द्रौपदी जहाँ आत्मसम्मान की रक्षा के लिए आवाज उठाती है वहीं कुंती स्त्री होते हुए भी सत्ता की भूख रखने वाली नारी के रूप में चित्रित हुई है। वह स्त्री होकर भी स्त्री का दर्द समझे बिना उसे अपने पांचों पुत्रों की पत्नी बनाना चाहती है। कुंती के अन्दर की नारी मर चुकी है। उसमें जीवित है केवल सत्ता की भूख। वह पत्थर की भाँति भावशून्य है। जबकि द्रौपदी तड़पकर कुंती का विरोध करती है। कुंती के सभी प्रकार के प्रलोभन देने पर भी द्रौपदी छटपटाती है। वह इसे अनर्थ मानती है। सत्ता की भूख मेरे अन्दर की यंत्रणा नहीं मिटा पाएगी। सारे झूठ मिलकर भी मेरे अंदर जलती सच्चाई की चिंगारी को नहीं ढाँप पाएंगे।

''मुझसे मत छीनों, मेरा स्वाभाविक अधिकार ।
सत्ता का सहारा वैभव मेरी यंत्रणा नहीं मिटा सकेगा।''[63]

कठोर कुंती पत्थर के समान मुद्रा में खड़ी रहती है। वह द्रौपदी को स्त्री न समझकर सत्ता पाने में बाधक वस्तु मात्र समझती है। पाँचों पांडवों द्वारा द्रौपदी के प्रति आकर्षित होना पुरूषों द्वारा किये जा रहे नारी शोषण को दर्शाता है। वे द्रौपदी को केवल भोग्या वस्तु समझते हैं। कुंती उन सभी की मनोस्थिति को भाँप लेती है। वह जानती है कि यदि मेरे पुत्र द्रौपदी के कारण आपस में लड़ते हैं तो उनकी शक्ति कमजोर हो जाएगी। जिससे वे राजत्ता नहीं प्राप्त कर सकेंगे। इसलिए वह द्रौपदी के प्रति कठोर एवं संवेदनहीन हो जाती है तथा राज सतता मोह में अंधी होकर द्रौपदी के प्रति अन्याय करती है। वह द्रौपदी को महत्त्वहीन वस्तु मानकर पाँचों भाइयों में बांटती है। कुंती का सत्ता मोह पूरे स्त्री समाज को कलंकित करता है। वहीं द्रौपदी अन्याय न सहन ककने वाली स्वाभिमानी स्त्री के रूप में चित्रित हुई है। माधवी भी द्रौपदी की भाँति औरतों पर हो रहे अत्याचार एवं अन्याय के प्रति विरोध का आह्वान करती है। वह राजनेताओं द्वारा स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार का वर्णन सबके समक्ष करती है।

माधवी आधुनिक स्त्री की भाँति जहाँ राजभवन में हो रहे स्त्रियों के प्रति अत्याचार को सबके समक्ष प्रत्यक्ष करती है वहीं दलित एवं गरीब युवती पर राजसैनिकों द्वारा जबरदस्ती करते हुए वह नहीं देख पाती। सभी ग्रामीणों में भी वह शोषण के विरूद्व उत्साह जगाती है। वह पूरे आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास के साथ अन्य सैनिकों का विरोध करती है। 'चिड़िया की आँख' नाट्य काव्य की यह घटना वर्तमान में हो रही बलात्कार की घटनाओं को प्रत्यक्ष करती है। माधवी मूक दर्शक बनकर सब कुछ देखने वाली नहीं शोषण के विरूद्ध हथियार उठाने वाली स्त्री के रूप में चित्रित हुई है। वहीं राजसैनिकों द्वारा किये गये जघन्य अपराध निष्क्रिय

---

[63] वही, पृ॰ 72

राजतन्त्र की ओर इशारा करते हैं। ग्रामीण युवती के साथ हो रहा अन्याय वर्तमान समय की स्थितियों को दर्शाता है। दिल्ली में हुआ निर्भया हत्याकाण्ड एवं रोहतक में नेपाली युवती के साथ हुआ मानवता को शर्मसार करने वाला दर्दनाक हादसा इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। 'चिड़िया की आंख' में निहित नारी पात्र, कुंती, द्रौपदी एवं माधवी को अलग–अलग रूपों में चित्रित किया गया है। कुंती जहाँ सत्ता की भूख में अपना विवेक खो देती है। वहीं द्रौपदी एवं माधवी आधुनिक नारी के समान अपने साथ हो रहे शोषण का विरोध करने वाली स्त्रीपात्र है।

शम्बूक में सीता को ऐसी नारी के रूप में चित्रित किया गया है जो राम द्वारा परित्यक्ता है। शम्बूक कहता है कि सीता के सत्तीत्व की परीक्षा ली गई। फिर प्रजा के कहने पर उसे क्यों अस्वीकार कर दिया गया। क्या सीता को प्रजा के अधिकार नहीं पता थे। वह भी प्रजा बनकर तुमसे न्याय की याचना कर सकती थी। परन्तु तुमने सीता को प्रतिवाद का अवसर ही नहीं दिया। उसे छलपूर्वक जंगल में छोड़कर आ गए। उस भूमि पुत्री ने तुम्हारी पत्नी होने का दायित्व पूर्ण किया। परन्तु तुम उसके ह्रदय को नहीं जीत पाये। क्या तुम पति होने का फर्ज निभा पाये? सीता ने तुम्हारे साथ वन गमन के लिए राजभवन का सुख एवं वैभव त्याग दिया। परन्तु क्या तुम उसके वन में जाते समय अपनी राज लोलुपता छोड़कर उसके साथ वन में जा पाए? क्या सीता को अवध से ऐसे निकाला जाना स्वीकार्य है? नहीं अपितु उन्हें छलपूवर्क राज्य से निकाल कर तुमने स्त्री जाति पर भी अत्याचार किया है। उसी प्रकार तुम्हारे नगर जन भी आदिवासियों को समुद्र की मछलियों के समान समझते हैं। अर्थात वे इनके भोलेपन एवं इनकी मासूमियत का अनुचित फायदा उठाकर उन्हें भोग्य पदार्थ (सैक्स सब्जेक्ट) से अधिक कुछ महत्त्व नहीं देते। यह विषय इस प्रकार स्त्रियों को स्थिति को चित्रित करता है –

''पर इन्हें संवेदना से हीन
नगरवासी समझते मृग–मीन।।''[64]

उपुयर्क्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने आधुनिक वन्य जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के भोलेपन, मासूमियत आदि का परिचय देते हुए उनके शोषण तथा उनके प्रति स्वस्थ नगर समाज की दृष्टि का संकेत देता है। आदिवासी स्त्रियों को भोग्या वस्तु मात्र समझकर वन्य अधिकारी भी उनका उपभोग कर उन्हें तिल–तिल कर मरने के लिए छोड़ देते हैं। बार–बार उच्च समाज द्वारा उनकी अस्मिता को तार–तार किया जाता है। परन्तु फिर भी वह अज्ञानता वश अपना उसे अपना भाग्य समझ कर अपने साथ हो रहे अन्याय एवं अत्याचार को सहन करती रहती हैं। स्त्रियों की दयनीय दशा को चित्रित कर कवि स्त्री समाज के उत्थान के लिए सजगता का प्रयास करता है।

---

[64] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 31

शम्बूक के प्रश्नों के माध्यम से कवि ने स्त्री समाज द्वारा उठाये गये प्रश्नों को दर्शाया गया है। शम्बूक कहता है कि यदि विभीषण तुम्हारा भक्त था तो वह एकान्त में भजन सिमरन क्यों नहीं करता रहा। वह क्यों लड़ने को तैयार हो गया। यही नहीं नारी के प्रति आसक्त होकर उसने अपने ही भाई को मरवाने में तुम्हारी सहायता की। जब बार–बार रावण के सिर वापिस आने लगे तब विभीषण ने ही उसकी नाभि का रहस्य बताया ताकि रावण की मृत्यु हो और विभीषण को सत्ता के साथ–साथ मंदोदरी भी मिले क्योंकि वह पहले से ही अपने भाई की पत्नी मंदोदरी के प्रति आसक्त था। इसलिए शम्बूक उस पर व्यंग्य करता हुआ कहता है –

''वह विभीषण था अगर
केवल तुम्हारा भक्त, क्यों बना लंकाधिपति
मंदोदरी – आसक्त?''[65]

विभीषण द्वारा राम का साथ देना भक्ति नहीं बल्कि मंदोदरी के प्रति विभीषण की आसक्ति थी। इस प्रकार पुरूष प्रधान समाज में सदैव स्त्री को भोग्य वस्तु मानकर उसका लाभ उठाया जाता है। इसी कारण मंदोदरी भी विभीषण की षडयंत्रकारी नीतियों का शिकार हुई। युगों–युगों से यही चलता आया है। स्त्री को भोग्या मानकर पुरूष उसे भोगता आया है।

वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति पुरूषों के समान थी। इसी कारण वैदिक काल को भारतीय समाज का स्वर्णिम काल कहते हैं। उस समय स्त्रियों का अपमान करना पाप समझा जाता था। और स्त्री की रक्षा करना सबसे बड़ी वरियता थी। मध्ययुग में स्त्रियों का स्तर पुरूष के समान नहीं था। रीतिकाल भारतीय इतिहास में स्त्रियों की स्थिति में कॉफी सुधार आया परन्तु अनेक अधिकार मिलने के बाद भी अशिक्षित क्षेत्रों में स्त्री की स्थिति दयनीय बनी हुई है। अंधायुग में चित्रित गांधारी पुत्र शोक से जर्जर माता है। वह एक दुखी नारी है क्योंकि उसके पुत्रों के मरने से उसके हृदय में होने वाली पीड़ा ने उसे कटु बना दिया है। कवि ने इस प्रकार एक नारी की कारूणिक एवं कष्टकारी स्थिति को प्रकट किया है –

''मेरे सब पुत्र एक–एक कर मारे गए
अपने इन हाथों से
मैनें उन फूलों सी बंधुओं की कलाइयों से
चूड़ियाँ उतारी हैं।
अपने इस आंचल से
सिंदूर की रेखाएं पोंछी है।''[66]

नरेश मेहता कृत प्रवाद–पर्व में भी अंधायुग की भाँति नारी के आदर्श रूप को चित्रित किया गया है। प्रवाद पर्व में सीता विवेकशील है वह मानव मन भी क्रिया प्रतिक्रिया से पूर्णतः

[65] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 55
[66] डॉ॰ धर्मबीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 55

परिचित है। अपने इन्हीं गुणों के कारण उन्हें भावी घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। पति को चिंताग्रस्त देखकर उनका धैर्य बंधाते हुए कहती है–

''मुझे अवगत था आर्यपुत्र
आरम्भ से ही प्रतीती थी
कि मुझे / इतिहास और
इतिहास पुरूष के पार्श्व में
केवल एक प्रतिमा सा खड़ा होना है।''[67]

सीता के माध्यम से कवि ने स्त्री की भविष्य में स्थिति को दर्शाया है। कवि दुष्यन्त कुमार ने वीरिणी के माध्यम से पुरूष एवं स्त्री के सम्बंधों पर विचार व्यक्त किया है। जब सती अपनी इच्छा से शिव से विवाह कर लेती है तो वीरिणी अपने पति दक्ष को समझाने का प्रयत्न करती है। उसकी विवशता को इन शब्दों के माध्यम से समझा जा सकता है –

''नर–नारी के सम्बंधों में
इसे भी ज्यादा अनहोनी घटनाएं
घटती रहती है
परिणय नारी की परिणति है।''[68]

हर समय स्त्री को ही परिस्थितियों से समझौता करने के लिए कहा जाता है। पुरूषों द्वारा स्त्री को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। प्राचीन नारी इन सबको अपना भाग्य मानकर स्वीकार कर लेती थी। परन्तु आधुनिक स्त्री अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाती है। इसीलिए अग्निलीक की सीता के लिए कहा गया है – सीता ने भले ही समाधि ली। मगर उसकी इस शहादत ने पुरूष समाज की चूले हिला डाली। नारी का बलिदान एक क्रांति का आरम्भ है। शुभ संकेत है कि क्रांति जारी है। इसका अन्त नहीं हुआ है।

निष्कर्षतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में नारी मुक्ति को नई दिशा दी गई है। नाट्य–काव्यों में संघर्ष की पुकार पुष्ट होकर नारी मुक्ति, नारी स्वतंत्रता, समानता के क्षितिज्ञ खोल रही है। स्त्री समाज में सम्मानीय जीवन जीने के लिए छटपटा रही है। यही छटपटाहट, स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में देखने को मिलती है।

4.9 सामाजिक परम्परा और विश्वास

स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में जहाँ एक और विषाद, कुण्ठा, वेदना एवं निराशा दिखाई पड़ती है। वहीं दूसरी और आस्था, विश्वास , सामाजिक परम्पराओं एवं सामाजिक रीतियों के दर्शन भी होते हैं। हमारे समाज में कुछ परम्पराएँ प्राचीन समय से ही चली आ रही है। जिनका

[67] डॉ॰ नरेश मेहता, प्रवाद–पर्व, पृ॰ 61
[68] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, 'एक कंठ विषपायी', पृ॰ 18

वर्णन स्वतन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में भी किया गया है। जो आज भी हमारे समाज में दृश्यमान हैं। धर्मवीर भारती कृत अंधा युग में भी ऐसी बहुत सी परम्पराएँ देखने को मिलती हैं। साहित्यकार जब रचना करता है तो उसका जुड़ाव अपने समाज से रहता हैं। अनजाने ही वह रचनाओं में अपने समाज की परम्पराओं का निर्वाह करने लगता है। अंधायुग में भी जब कौरवों एवं पांडवों का युद्ध होता है तो गांधारी के माध्यम से समाज में विधवा की स्थिति को दर्शाया गया है :–

''मेरे सब पुत्र मारे गए
अपने इन हाथों से
मैनें उन फूलों सी वधुओं की कलाइयों से
चुड़ियाँ उतारी हैं
अपने इस आंचल से
सिंदूर की रेखाएं पोंछी हैं।''[69]

वर्तमान समय में भी जब किसी स्त्री का पति गुजर जाता है वो उसके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाता है क्योंकि आज भी सिंदूर एवं चूड़ियों को सुहाग की निशानी माना जाता है।

धर्मवीर भारती की भाँति कवि दुष्यन्त कुमार ने भी अपने नाट्य काव्यों में सामाजिक परम्पराओं एवं विश्वासों को परिलक्षित किया है। हमारे समाज में परम्परा रही है कि जब लड़की के मायके में कोई आयोजन होता है तो उसमें पति एवं लड़की दोनो को आदर सहित बुलाया जाता है इसी परम्परा का उल्लेख वीरिणी के इन शब्दों से स्वतः ही हो जाता है –

''इतना बड़ा यज्ञ, इतना विशाल आयोजन
जिसमें आमन्त्रित है तीनों लोकों के प्रतिनिधि
समस्त ऋषि और देवगण
जिसमें सारे संबंधी आए हैं
सबका अलग भाग है
उसमें जामातओं का भी हक होता है।''[70]

शिव को यज्ञ में न बुलाने पर वीरिणी कहती है शिव हमारे जामाता है। यदि शिव को यज्ञ में नहीं बुलाया जाता तो हमारी बदनामी होगी। हमारी पुत्री हमारे विषय में क्या सोचेगी? दक्ष कहते हैं कि हमारी पुत्री को बहला फुसलाकर शिव ने विवाह किया है। यदि सती उसे पसंद थी तो वह मुझसे कहता इतना दिखावा करने की क्या आवश्यकता थी। क्योंकि हमारे समाज में ऐसी विवाह प्रणाली है जिसमें माता–पिता ही लड़कें एवं लड़की का विवाह तय

[69] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 51
[70] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 12

करते हैं। वे जहाँ भी रिश्ता करते हैं लड़की को मूक जानवर की तरह वहाँ भेज दिया जाता है। शिव एवं सती ने प्रेम विवाह कर इस प्राचीन विवाह परम्परा को तोड़ दिया जिस कारण दक्ष रूष्ट है एवं समाज में इसे अपनी बदनामी बताता है –

''क्या आवश्यकता थी बोलो
इस रूपक के आलम्बन की
व्यर्थ प्रेम के नाम
हमारी लोक हँसाई, बदनामी की
परम्पराओं के खंडन की।''[71]

एक कंठ विषपायी में अनेक सामाजिक परम्पराओं एवं विश्वासों को चित्रित किया गया है। समाज में किसी का प्रेम विवाह करना विवाह परम्परा के विरूद्ध है। अतिथि सत्कार, यज्ञ का आयोजन आदि सभी कार्य सामाजिक परम्पराओं को ही निरूपित करते हैं। हमारे समाज में शकुन अपशकुन जैसे शब्दों का प्रयोग आज भी होता है। आज के समय में जब विद्या का प्रचार–प्रसार हो चुका है। वैज्ञानिक एवं भौतिकतवादी युग में भी कुछ व्यक्ति प्राचीन अंधविश्वासों में विश्वास रखते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी माना जाता है कि स्त्री की छठी इन्द्री के कारण वह भय की आशंका पहले ही भाँप जाती है। जब सती बिना बुलाए अपने पिता दक्ष के यज्ञ में पहुँचकर शिव को आदर–सत्कार न देने का कारण पूछती है। तो दक्ष द्वारा विद्रोही भाव में उत्तर दिया जाता है कि शिव हमारा शत्रु है। इसी समय महल के अन्दर वीरिणी सर्वहत से कहती है कि –

''मेरी दांयी आँख फड़कने लगी अचानक
सहसा बैठे–बैठे
मेरा जी अकुलाया, अभी–अभी
मेरे हल्कम्पन की गति, आँखों के सामने
अंधेरा–सा घिर आया, ऐसा लगता है
जैसे कोई अनिष्ट होने वाला है।''[72]

निष्कर्षतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में हमारे समाज में निहित ऐसी परम्पराओं, मान्यताओं, एवं विश्वासों को चित्रित किया गया है जो आज भी हमारे समाज में विद्यमान है। कुछ परम्पराएं समय के साथ–साथ अनावश्यक लगने लगी हैं। परन्तु कुछ परम्पराएं आज भी हमारे समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है जिनसे साहित्यकार भी अछूता नहीं रह सकता।

---

[71] वही, पृ॰ 19
[72] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 23

4.10 जन–जीवन की दशा का निरूपण :

समाज का हिस्सा होने के कारण साहित्य में मनुष्य के रहन–सहन, रीति–रिवाज एवं उसके प्रतिदिन के क्रियाकलापों का प्रभाव आवश्यक हो जाता है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में समाजिकता का व्यापक स्वरूप दिखाई देता है। आज का जन मानस वर्तमान स्थितियों से उत्पन्न संकटों को किस प्रकार सहन कर रहा है। नाट्य–काव्यों में भी आधुनिक मानव की परिस्थितियों का जीवंत चित्रण किया गया है। आज का मानव अधिक भावुक प्रबुद्ध, और स्वाभिमानी है। अंधायुग का पात्र अश्वत्थामा आधुनिक मानव का ही प्रतीक है। उसके माध्यम से कवि ने आधुनिक समस्याओं, विदूषताओं, विशेषताओं, कुंठाओं के साथ ही मानव की दशा का गहन चित्रण किया गया है। अंधायुग में कवि ने आज जनता के प्रतीक प्रहरियों के माध्यम से सामान्य जनजीवन को रूपायित किया है।

''कुछ भी अर्थ नहीं था
जीवन के अर्थहीन
सूने गलियारे में
पहरा दे देकर
अब थके हुए हैं हम
अब थके हुए हैं हम।''[73]

आधुनिक मानव भी संघर्ष करते–करते थक चुका है। वह उदासीन होकर जीवन जी रहा है। आम जनता के प्रतीक प्रहरी भी आधुनिक जन जीवन की दशा को चित्रित करते हैं। लेखक ने इनके माध्यम से वर्तमान व्यवस्था में दासवृत्ति ग्रस्त जनता की मनोवृत्ति की निरर्थकता का संकेत दिया है। युद्ध के विनाशकारी परिणाम का जन–जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव भी अंधायुग में निरूपित है। किस प्रकार पहले स्त्रियाँ अपने आस–पास के परिवेश को सुरभित पवन तरंगों से तरंगित करती हुई आया करती थी। आज वे विधवा है। सम्पूर्ण कौरव नगरी आज सुनसान दिखलाई पड़ती है क्योंकि युद्ध में सभी शूरवीर बलिदान हो गए हैं। इस प्रकार युद्ध से जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया है।

'एक कंठ विषपायी' भी आधुनिक जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। सर्वहत के माध्यम से कवि ने प्रजा की मनः स्थिति का सही विश्लेषण किया है। आज प्रजा शासकों के भय एवं अनेक प्रकार की विसंगतियों के मध्य अपना जीवन व्यतीत कर रही है। शासक अपनी सुविधा के अनुसार नियमों में परिवर्तन कर लेते हैं और प्रजा खामोश रहती है। प्रजा की इसी मानसिकता को दर्शाते सर्वहत के ये वचन द्रष्टव्य हैं –

अरे....हम प्रजा थे,

---

[73] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 15

हमने उफ तलक नहीं की
शासन के गलत सलत झोंकों के आगे भी
फसलों से विनयी हम बिछे रहे निर्विवाद।''[74]

'अंधायुग' की भांति 'एक कंठ विषपायी' में दासता की प्रवृति की ओर भी संकेत किया गया है। आज स्वतन्त्रता के 71 वर्ष बाद भी हम राजनेताओं के समक्ष गुलाम बन कर जी रहे हैं। स्वतन्त्रता से पूर्व जहाँ बाहरी गुलामी शक्तियों की गुलामी करते थे। उसमें अब परिवर्तन हो गया है। अब प्रजा अपने ही राजनेता की दास बनकर जीवन यापन करती है। उसके साचने–समझने की शक्ति क्षीण हो गई है। वह मात्र शासक के आदेशों का पालन करती है। प्रजा आज मानसिक रूप से गुलाम बन चुकी है। इसीलिए सर्वहत जोकि साधारण जनता का प्रतीक है। व्यंग्यात्मक शैली में इसी दास प्रवृत्ति को स्वीकृति प्रदान करता है –

''मुझको तो आदेश चाहिए
मैं तो शासक नहीं प्रजा है
मात्र भृत्य हूं इसीलिए
केवल सुनना मेरा स्वभाव है।''[75]

सर्वहत के माध्यम से जनता की दीन हीन दशा का चित्रण कवि ने सफलतापूर्वक किया है कि किस प्रकार प्रत्येक विपदा को साधारण जन ही झेलता है। जनता सदैव शासक के फैसलों को समर्थन करती है। सर्वहत के व्यक्तित्व के माध्यम से वर्तमान लेखक जनजीवन की दशा को चित्रित करना चाहता है। कवि ने साधारण जन को पगडंडी के समान प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया है –

''एक पगडंडी के सिवा और क्या है?
धूलभरी विस्मृत–सी पगडंडी एक
जिस पर थके और जख्मी पदचिह्न हैं अनेक
और जो परम्परा की तरह
एक दायरे में
चक्कर लगाती हुई चलती है।''[76]

'एक कंठ विषपायी' में जहाँ आधुनिक प्रजा के स्वरूप को प्रकट किया गया है। वहीं शम्बूक में आदिवासियों के जीवन की त्रासदी को प्रकट किया गया है जिन्हें सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं का लाभ नहीं मिलता तथा शिक्षा के कारण अभावग्रस्त जीवन जीते हैं। इसीलिए कवि इनके हक के लिए आवाज उठाता है –

---

[74] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 110
[75] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 111
[76] वही, पृ॰ 114

''इन्हें भी अपनत्व का
साधन मिले
धन मिले या नहीं
पर ईंधन मिले।''[77]

अतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में सामान्य जन जीवन की दशा को चित्रित किया गया है। प्रजा के संत्रास, कुंठा, उदासीनता को प्रकट किया है तथा राजनेताओं द्वारा प्रताड़ित प्रजा की दयनीय दशा को दर्शाया गया है।

4.11 समाज में फैली स्वार्थ एवं संवेदनहीनता की समस्या :

आज के समय में गतिशीलता तो है परन्तु संघर्ष उत्पीड़न एवं शोषण जन्य गति है। जब व्यक्ति समाज अथवा राष्ट्र अपनी स्वप्निल अभिलाषाओं के लिए जीवन जीता है। संवेदन हीनता के कारण वह विनाश एवं संहार के कगार पर खड़ा होता जा रहा है। भौतिक सुविधाओं में अत्यधिक तरक्की तो हो रही है लेकिन विवेक एवं संवेदना वह खोता जा रहा है। आज का युग ऐसा अंधा समुद्र है जिसमें स्वार्थी, आडम्बर युक्त, घातक प्राणी परस्पर लड़ते झगड़ते हुए विवेकहीन होकर रहते हैं। कविवर भारती कृत अंधायुग में चित्रित अश्वत्थामा नामक पात्र आधुनिक मानव के अविवेक, अनैतिक एवं संवेदनहीनता का जीवंत प्रतीक है। जो अपने शरीर पर अनगिणत घाव लिये हुए युग युगान्तर तक जीने के लिए अभिशप्त है। अपने मित्र दुर्योधन एवं पिता की मृत्यु से वह विक्षिप्त हो गया है। युद्ध में युधिष्ठिर के अर्धसत्य एवं भीम के नियमोलंघन के कारण उसका हृदय टूट गया है। जिसके फलस्वरूप वह अपना विवेक खोकर अनैतिकता की राह अपना लेता है। वह सामान्य स्थिति में न रहकर असामान्य हो गया है। प्रतिशोध की उत्कृष्ट इच्छा उसे हिसंक, क्रूर और निर्दयी बना देती है। वह अपनी संवेदना खो देता है। वध उसके लिए नीति न रहकर मनोग्रन्थि बन जाती है। परिणाम स्वरूप वह अनीति, अमर्यादा पशुता, बर्बरता का प्रतीक बन जाता है। स्वार्थ एवं संवेदनहीनता कवि के शब्दों में स्पष्टतः परिलक्षित होती है –

''अश्वत्थामा ने काट दिये उसके घुटने
सोया था दूर शिखण्डी उसके पास पहुंचकर।
जितने बच्चे बूढ़े नौकर बाहर भागे
बाणों से छेद दिया उनको कृतवर्मा ने।
डरे हुए हाथी चिंघाड़कर शिविरों को
चीरते हुए भागे।

---

[77] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 30

शय्या पर सोती हुई
स्त्रियाँ जहाँ थी वहीं कुचल गई।
उसी समय उन दोनो वीरों ने
पाण्डव शिविरों में आग लगा दी।''[78]

ये पंक्तियाँ युग–जीवन के यथार्थ को प्रकट करती हैं। जीवन में केवल सत्य, प्रेम, करूणा और मैत्री नहीं है जीवन इतना सादा और सीधा नहीं है। इसमें असत्य भी है घृणा, द्वेष, बैर और आडम्बर भी है। इसे जीने एवं समझने के लिए विवेक एवं संवेदना की आवश्यकता है। समय बोध के जटिल वैषम्य को इतिहास के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना 'धर्मवीर भारती' का उद्देश्य है। सफेद केंचुअल व्यक्तिगत स्वार्थो एवं लालसाओं का प्रतीक है। जिन्होंने उसको अब इतना अंधा कर दिया है कि भीतर जो एक आदमी है। सत्य, प्रेम, करूणा और ममता से आवृत है। वह उसे दिखाई नहीं देता। यह केंचुअल इतिहास संदर्भ में गांधारी की आँखों पर बंधी पट्टिया हैं जिनमें कोरी भावुकता है। विवेक का नाम नहीं। यही कारण है कि अंधा भविष्य अभी तक चल रहा है। प्रेतात्मा याचक के कथन से लेखक ने आधुनिक समय की व्यंजना की है। आज का युग विषमताओं से गृहस्थ दिशाहीन, स्वार्थों एवं संघर्षशील प्राणियों का युग है। इसी अभिव्यंजना को कवि ने इस प्रकार प्रकट किया है –

''ऐसा है यह अंधा समुद्र
जिये हम आज का भाव प्रवाह कह सकते हैं।
और कुछ सफेद केंचुअल ऊपर तैर आए हैं,
सफेद पट्टियों की तरह
ये पट्टियां गांधारी की आँखों पर हैं,
सैनिक के जख्मों पर।''[79]

विवेकशून्य व्यक्ति मोहान्धता के जाल में बुरी तरह घिर जाता है कि उसे इसके विकृत रूप का, इससे होने वाले विनाश का बार–बार आभास होने पर भी उससे दूर नहीं हो पाता। दुर्योधन की मृत्यू के पश्चात युयुत्सु के प्रति धृतराष्ट्र की स्वार्थ प्रवृत्ति एवं पांडवों के प्रति घृणा स्पष्ट झलकती है। वहीं गांधारी अपनी ममता के स्वार्थ में अंधी हो गई है। वह सोते हुए पांडवों की मृत्यु का समाचार सुनकर प्रसन्न हो जाती है। वह रक्त से नहाये हुए अश्वत्थामा को वह अपनी दिव्य दृष्टि से देखना चाहती है। जिसमें गांधारी की संवेदन शून्यता के दर्शन होते हैं। उसका इंसानी हृदय इतना कठोर हो जाता है कि वह उत्तरा के गर्भ पर छोड़े गए ब्रह्मास्त्र का भी समर्थन करती है।

---

[78] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 82
[79] वही, पृ॰ 75

कवि दुष्यन्त कुमार ने भी अंधायुग की भाँति 'एक कंठ विषपायी' में आधुनिक मनुष्य में समाप्त होती जा रही संवेदना को व्यंग्यात्मक ढंग से चित्रित किया है। सर्वहत जब दक्ष के विध्वंस के पश्चात जीर्ण–शीर्ण अवस्था में जीवित बचता है तो वह लड़खड़ाता हुआ देवलोक पहुँच जाता है। जहां इन्द्र के द्वारा उसके आने का प्रयोजन पूछने पर बताता है कि वह कई दिनों से भूखा है इसलिए रोटी के लिए यहाँ आया है। वह कहता है कि यदि रोटी नहीं मिलती तो मैं मदिरा ही पी लूंगा। यदि मदिरा भी नहीं मिलती तो मैं शोणित पीकर भी जीवित रह लूंगा। ब्रह्मा के द्वारा रक्त न मिलने की बात करने पर वह व्यंग्यात्मक रूप में कहता है कि –

''फिर तुम क्यों आये हो?
जमें हुए रक्त पर
अपनी संवेदना का अमृत छिड़कने?
या केवल दृश्य परिवर्तन के लिए?''[80]

सर्वहत के कथनों में मार्मिकता के माध्यम से कवि ने प्रजाजनों की कारूणिक स्थिति को उजागर किया है। उसकी क्षत–विक्षत अवस्था को देखकर शासकों का दिल नहीं पसीजता क्योंकि शासक स्वार्थ में अंधे होकर संवेदन शून्य हो गए हैं। अपने स्वार्थों के समक्ष उन्हें किसी प्रजाजन का दुख, दर्द, कष्ट पीड़ा दिखाई नहीं देती। आज का स्वार्थी राजनेता भी भौतिक सुखों को महत्त्व देता हुआ संवेदना रहित हो चुका है।

आधुनिक समय में मानव कठोर, निर्दयी, क्रूर अनैतिक, भ्रष्ट एवं ईर्ष्यालु होता जा रहा है। आज के समय में उसके लिए भावों का नहीं स्वार्थों का ही संबंध रह गया है। चिड़िया की आंख में ग्रामीण युवती के साथ हो हरे अमानवीय व्यवहार को देखकर भी घाटी के लोग डर से चुप रहते हैं। वे भाव शून्य होकर यह सभी देखते हैं। परन्तु उस गरीब लड़की की सहायता के लिए कोई नहीं आता। उसके दर्द को कवि ने इस प्रकार रूपापित किया है – ''वह चीखती हुई शरण के लिए ग्रामीणों की ओर दौड़ती है वे भय से दो कदम पीछे लौटते हैं और अपने मुंह फेर लेते हैं।''[81] ग्रामीण निस्तब्ध होकर सभी कुछ देख रहे हैं। परन्तु उसकी सहायता के लिए कोई भी आगे नहीं आता। यह मनुष्य के अन्दर समाप्त हो रही संवेदना का ही परिणाम है कि सामने हो रहे अत्याचारों से मनुष्य अपना मुंह फेर लेते हैं। इसी भांति द्रोणचार्य ,ारा एकलव्य का अंगूठा काटना भी मनुष्य की कायरता, छलकपट संवेदनहीनता को दर्शाता है। वहीं पाण्डवों द्वारा सत्ता लोभ में निषाद परिवार को जिंदा जला देना उनकी क्रूरता का परिचायक है। गरीब मनुष्य भूख से करहाता हुआ मर रहा है। परन्तु सम्पन्न इंसान पत्थर बन कर यह सब देखता रहता है।

---

[80] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, 'एक कंठ विषपायी, पृ॰ 51
[81] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 55

निष्कर्षतः मनुष्य स्वार्थ के कारण संवेदनहीन होता जा रहा है। उसके अन्दर दया, करूणा, प्रेम, सहनशीलता, नैतिकता आदि भाव नष्ट होते जा रहे हैं जिससे मनुष्यता समाप्त हो गई है आज के समय में मनुष्यों के लिए भावों का नहीं स्वार्थो का ही संबंध हो गया है। इसी कारण वह निर्दयी, कठोर, क्रूर, हिसंक, अनैतिक, भ्रष्ट एवं ईर्ष्यालु होता जा रहा है।

4.12 आधुनिक समस्याएँ :–

वास्तविक कलाकृति वही है जिसका शाश्वत मूल्य हो। समय चाहे कितनी भी चाल बदले कितनी ही मंजिल पार कर ले फिर भी वास्तविक साहित्य कृति की महत्ता कम नहीं होती। कवि क्रान्तिदर्शी होता है। वह अतीत और अनागत का ज्ञाता होता है। वह जो कुछ अपनी कृति में लिखता है उसका युगों–युगों तक महत्व होता है। यही स्थावर महत्ता उसे साहित्य में विशिष्ट स्थान दिलाती है। स्वतन्त्रता के बाद लिखे गए नाट्य–काव्यों में हमें आज विद्यमान समस्याओं की ओर संकेत मिलते हैं। साहित्य सर्जन की समस्या युद्धों की समस्या, भाई भतीजावाद की समस्या, शासन तंत्र की समस्या, जनता की दासवृति की समस्या, अस्पृश्यता, वर्ण व्यवस्था आदि समाज में फैली ऐसी समस्याएं है जिनकी ओर स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्य हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं तथा जो वर्तमान समय में भी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

आधुनिक समय में सावन भादों की उमड़ती–घुमड़ती घनघोर घटा के समान युद्ध का संकट छाया हुआ है। आज अमानुषिक शक्तिशाली, स्वाधीन विज्ञान ने स्वार्थी मानव के हाथ में अनेक अस्त्र–शस्त्र थमा दिये हैं जिनसें मानवता पर खतरा बना हुआ है। एटम बम की समस्या की और संकेत करती हुई धर्मवीर भारती जी की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

''ज्ञात है तुम्हें क्या परिणाम इस ब्रह्मास्त्र का
यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ नरपशु ।
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमयी वनस्पति नहीं उगेगी।''[82]

युद्ध का परिणाम संहार ही संहार है जो मानवता के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। युद्ध की समाप्ति के पश्चात जो शेष बचता है वह है चीखती, कराहती मानवता, अपार धन हानि विधवाओं के आंसू, रोते बिलखते घायलों की कतार, पुत्र शोकाकुल बनी माताएं और चारों तरफ विनाश ही विनाश। युद्ध आज के युग की भयंकर समस्या बनी हुई है। सभी देश अस्त्र शस्त्र बनाने की होड़ में लगे हुए हैं। ये अस़्त्र शस्त्र से किसी की रक्षा करें या ना करें किन्तु हत्या

[82] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 95

अवश्य कर देंगे। अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग की भयंकर समस्या का संकेत अंधायुग नाट्य काव्यों में प्रहरियों के वार्तालाप से किया गया है–

''युद्ध हो या शांति हो
रक्तपात होता है
अस्त्र रहेंगे तो
उपयोग में आएंगे ही।''[83]

अंधायुग की क्या भले ही पौराणिक हो किन्तु इसका कथ्य सर्वथा अर्वाचीन है। मिथकीय पद्वति के माध्यम से रचना में प्रस्तुत आधुनिक समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। अंधायुग में उठाई, ब्रह्मास्त्र के प्रयोग एवं युद्ध की समस्या वर्तमान समय में भी अजगर के समान मुँह फैलाए खड़ी है।

'दुष्यन्त कुमार' कृत 'नाट्य काव्य 'एक कंठ विषपायी' में भी पौराणिकता के माध्यम से आधुनिक समस्याओं को चित्रित किया गया है। उन्होंने अपने नाट्य काव्य की आभार कथा में लिखा है कि – ''जर्जर रूढ़ियों और परम्परा के शव से चिपके हुए लोगों के संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठभूमि और नए मुल्यों को संकेतित करने के लिए इस कथा में पर्याप्त सामर्थ्य है।''[84] प्रेम विवाह आधुनिक युग की ज्वलन्त समस्या है अभिभावक यह समझने का प्रयत्न नहीं करते कि जीवन साथी चुनने का अधिकार एवं योग्यता नई पीढ़ी से संबंधित है। जब किसी सम्पन्न परिवार की संतान किसी साधारण स्थिति वाले परिवार की संतान से विवाह करती है तो उसके माता–पिता दक्ष प्रजापति की भाँति इसे अपनी संतान को बहकाने का नाम देते हैं तथा वे विवाह का अपहरण कहते हैं। सती एवं शंकर द्वारा दक्ष की अनुमति के बिना प्रेम विवाह करने के कारण दक्ष उन्हें दोषी मानता है और इस विवाह को स्वीकार नहीं करता। वह इसमें समाज में अपनी निंदा समझता है। अपनी प्रतिष्ठा पर कलंक समझते हुए इस प्रेम विवाह को अपहरण की संज्ञा देते हुए कहता है–

क्या अबोध मन को फुसलाकर ?
विविध प्रलोभन देकर
उसे जीत लेना अपहरण नहीं है?
सती बालिका थी अबोध थी
तुम उसकी कैशोर्य भूल को क्षम्य कहोगी।
पर शंकर तो खुद को महादेव कहाता है?''[85]

---

[83] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 112
[84] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 13
[85] वही, पृ॰ 106

प्रेम विवाह के माध्यम से कवि ने समाज में चली आ रही परम्परागत विवाह प्रणाली का भी विरोध किया है। कुछ लोग स्वयं को प्रतिष्ठित समझ लेते हैं। परम्परा से चली आ रही प्रतिष्ठा को वे अपना अधिकार समझकर उसका विरोध नहीं कर पाते। सती एवं शिव के विवाह को समाज द्वारा स्वीकृति नहीं मिल पाती तथा उन्हें समाज में तिरस्कृत किया जाता है। आधुनिक समय में भी माता–पिता अपनी संतान के प्रेम विवाह करने पर उन्हें परिवार से निकाल देते हैं। इसीलिए कवि ने प्रेम विवाह की समस्या के माध्यम से इसके लाभ व हानियों को दर्शाते हुए इसकी चर्चा की है। इसके अतिरिक्त युद्ध की समस्या जो वर्तमान समय की सर्वप्रमुख समस्या है आज सम्पूर्ण विश्व में यु, एक प्रश्न बना हुआ है। सारा विश्व इसका समाधान खोजने में लगा हुआ है। शांति के समर्थक तक युद्ध का पक्ष लेते हैं। एक कंठ विषपायी में भी देवलोक में युद्ध पर चिंतन मनन किया जा रहा है। जहाँ इन्द्र युद्ध का समर्थन करते है वहीं ब्रह्मा द्वारा युद्ध को सामूहिक आत्मघात कहा जाता है –

''हाँ, आत्मघात
वह भी सामूहिक
मेरे अपने ज्ञानकोश में
युद्ध शब्द का यही अर्थ है।''[86]

युद्ध से पूर्व ही कवि ने युद्ध संबंधी समस्या पर विचार–विमर्श के माध्यम से प्रकाश डाला है। युद्ध से पूर्व ही युद्ध के भयंकर दुष्परिणामों को चित्रित किया है।

साम्प्रदायिकता की समस्या थी। आज महत्वपूर्ण समस्या बनी हुई है। धर्म एवं जाति के आधार पर देश कई भागों में बंट गया है। जिस कारण साम्प्रदायिकता बढ़ गई है। जाति एवं धर्म के नाम पर दंगे करवाकर राजनेता अपनी रोटियाँ सेकतें हैं। प्रजातंत्र के नाम पर राजतंत्र चल रहा है। एकलव्य द्वारा राजभवन में शास्त्रार्थ के लिए जाने पर माध्वी कहती है कि क्या एकलव्य जाति एवं धर्म की नवीन व्याख्या प्रस्तुत करने में सक्षम होगा –

''राजभवन से नये संबंध
तोड़ सकेगा
जाति और धर्म के दुर्ग को
जिनमें आदमी का विश्वास भटकता है।''[87]

अस्पृश्यता हमारे देश को खोखला कर रही है। यह दीमक की तरह हमारे राष्ट्र को अन्दर ही अन्दर कमजोर बना रही है। यह एक सभ्य समाज को विकसित करने में बाधक है। प्राचीन समय में अछूतों को शिक्षा का अधिकार नहीं था परन्तु आधुनिक समय में उन्हें समान अधिकार दिये गये हैं। प्राचीन समय में बह्मा शुद्रों को शिक्षा नहीं देते थे । इसी कारण

[86] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 27
[87] डॉ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 44

द्रोण एकलव्य को शिक्षा नहीं देते तो एकलव्य द्रोण से प्रतिवाद करता है कि ''आप ब्राह्मण हैं जो भी विद्या ग्रहण करने आये उसे विद्या देना ब्राह्मण का कर्तव्य है। आप अपने कर्त्तव्य से मुँह क्यों मोड़ रहे हैं आचार्य?''[88]

वर्तमान समय में राजनीति का प्रशानिक क्षेत्र में हस्तक्षेप भी पर्याप्त देखने को मिलता है। चिड़िया की आंख नाट्य काव्य में इस विषय को भी चित्रित किया गया है। माधवी का यह कथन इसी स्थिति का परिचायक है –

''आचार्य तुम्हें शिक्षा नहीं देंगे
क्योंकि आश्रमों में तय होती है
राजतंत्र की कूटनीति।''[89]

उसके अतिरिक्त आधुनिक मनुष्य के प्रत्येक क्षेत्र में किये जाने वाले अनवरत संघर्ष को भी कवियों ने प्रदर्शित किया है। आज मनुष्य संघर्ष के माध्यम से अकेला मुक्ति नहीं चाहता अपितु शोषण से सभी को मुक्त करना चाहता है। इसी कारण वह संघर्षरत रहता है। इसी को कवि ने शम्बूक के माध्यम से दर्शाया है –

''अपनी मुक्ति नहीं ढूँढता
सबकी मुक्ति के लिए
चुनता है सीधा संघर्ष।''[90]

शम्बूक में आदिवासी जनजातियों के संघर्ष को दर्शाया गया है। वहीं संशय की एक रात में कवि ने युद्ध एवं शांति संबंधी प्रश्नों पर चिंतन किया गया है। प्रवाद–पर्व में कवि ने अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को चित्रित किया है वहीं सूखा सरोवर में कवि ने व्यक्ति के सामाजिक मूल्यों को रूपापित किया है।

4.13 निष्कर्ष :

निष्कर्षतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में पौराणिक कथाओं के माध्यम से आधुनिक समाज की व्यवस्था, विसंगतियों, राजनीति का प्रशासन पर बढ़ता दबाव, युद्ध की समस्या, साम्प्रदायिकता को उभारा है जो आधुनिकसमय में बहुत बड़ी चुनौती बनती जा रही है। देश के विकास में बाधक समाज की विकृतियों को कवियों ने स्पष्टतः रूपापित किया है। ब्रह्मास्त्र का प्रयोग युद्ध की समस्या आधुनिक समय की सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है। इसीलिए कवियों द्वारा युद्ध के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को कवियों ने अपने नाट्य काव्यों में चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक जन–जीवन की दशा, समाज में फैला भ्रष्टाचार, स्वार्थ एवं

---

[88] वही, पृ॰ 47
[89] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 49
[90]

संवेदनहीनता जैसी समस्याओं को भी कवियों ने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रूपापित किया है। वर्णव्यवस्था के कारण हमारा समाज खोखला होता जा रहा है। जाति एवं धर्म के नाम पर बढ़ती साम्प्रदायिकता को भी स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में चित्रित किया गया है। अतः मिथकों के माध्यम से कवियों ने अपने नाट्य काव्यों में आधुनिक समाज को परिलक्षित किया है।